www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्यप्रतिनिधिसभा म.प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

अगस्त २०१३

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान एवं शिक्षाविद्
डॉ. सुरेन्द्र कुमार गुरूकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त

आर्य जगत के मनुस्मृति पर विशिष्ट कार्य करने वाले विद्वान, शिक्षा क्षेत्र में दीर्घकाल से योगदान देने वाले तथा प्रसिद्ध लेखक एवं सुप्रसिद्ध प्रवक्ता की नियुक्ति आर्य समाज के ख्याति प्राप्त गुरूकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के कुलपति पद पर हुई है । आपने दिनांक 10 जुलाई 13 को अपना पद्भार भी ग्रहण कर लिया है । इस नियुक्ति का सर्वत्र स्वागत किया जा रहा है । ' आर्य सेवक' परिवार एवं आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. विदर्भ की ओर से आपको हार्दिक बधाईयां तथा अभिनंदन । आशा है आपके कार्यकाल में विश्वविद्यालय का यश वर्धन होगा ।

सभा कार्यालय : दयानन्द भवन, मंगलवारी, सदर बाजार, नागपुर (महाराष्ट्र)

www.thearyasamaj.org

वैदिक विनय

अभय देव विद्यालंकार

मुझे सब का प्यारा बनाओ

प्रियं मा कृणु देवेषु, प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यतः उत शूद्रे उतार्ये ॥ अ.१९.६२.९ ॥

- शब्दार्थ -

हे प्रभो ! (मा) मुझे (देवेषु) देवों में {ब्राह्मणों में} (प्रियं कृणु) प्यारा करो (मा) मुझे (राजसु) राजाओं में {क्षत्रियों में} (प्रियं कृणु) प्यारा करो, (सर्वस्य पश्यतः) सब देखने वालों का (प्रियं) प्यारा करो, (उत शूद्रे) शूद्र में भी और (उत आर्ये) आर्य में भी, सब में, मुझे प्यारा बनाओ ।

विनय

हे मेरे प्यारे प्रभो ! तुम मुझे सब का प्यारा बनाओ । मैं यदि सचमुच तुम्हारा प्यारा बनना चाहता हूँ तो मुझे तुम्हारे इस सब जगत् का प्यारा बनना चाहिये । तुम तो इस जगत् में सर्वत्र हो, छोटे बड़े नीचे ऊँचे सभी प्राणियों में मन्दिर बना कर बसे हुए हो । यदि इन सब रूपों में मैं तुमसे प्यार न कर सकूँ तो मैं तुम्हें प्यारा कह के क्यों कर पुकार सकूँ ? ये सांसारिक लोग बेशक अपने से बड़ों, बलवानों, धनवानों और प्रतिष्ठा वालों के ही प्यारे बनना चाहते हैं, अपने से छोटों, गरीबों, दलितों और असहायों के प्यारे बनने की कोई जरूरत नहीं समझते । ये बेशक अपने राजाओं और स्वामियों का प्रेम पाना चाहते हैं किन्तु अपनी प्रजा और नौकरों का प्रेम पाने की कभी इच्छा नहीं करते । परन्तु इसी में ही तो तुम्हारे सच्चे प्रेमी होने की परीक्षा होती हैं । क्योंकि इन गरीबों, पीड़ितों असहायों का प्रेम चाहना ही असल में तुमसे प्रेम करना है । बलियों, धनियों और राजाओं सें प्रेम की इच्छा करना तो सांसारिक बल से, सांसारिक धन से, सांसारिक प्रभुत्व से प्रेम करना है, तुमसे प्रेम करना नहीं है । इसलिये मुझे तो तुम जहाँ देवों और राजाओं का प्यारा बनाओ, वहाँ इन सब देखने वाले सामान्य लोगों का तथा नौकरों और सेवकों का भी प्यारा बनाओ । जहाँ ब्राह्मणों और क्षत्रियों का प्यारा बनाओं वहाँ इन सामान्य प्रजाओं (वैश्यों) और शूद्रों का भी प्यारा बनाओ । शूद्रों और आर्यों का, नीचों और ऊँचों का, शिष्यों और गुरूओं का, सेवकों और स्वामियों का, अधीनों और अधिकारियों का, सब छोटों और बड़ों का मुझे प्यारा बनाओं । मुझे ऐसा बनाओ कि इस संसार में जो कोई मुझे देखे, मेरे संपर्क में आए, वह मुझ से प्यार करे । हे प्रभो ! मैं तो तुम्हारे इस सब संसार से प्रेम की भिक्षा मांगता हूँ । क्योंकि मैं देखता हूँ कि जब तक मैं तुम्हारे इस छोटे बड़े समस्त संसार से प्रेम नहीं कर लूँगा तब तक, हे मेरे परम प्यारे ! मैं कभी तुम्हारे प्रेम का भाजन न हो सकूँगा, तुम्हारे प्रेम का अधिकारी न बन सकूँगा ।

'वेदाञ्जलि' से साभार

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष - ११३ अंक ८
सृष्टि संवत १९६०८५३११४
दयानन्दाब्द - १८९
संवत - २०७०
सन् - २०१३, अगस्त २०१३

प्रधान
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो. नं. ०९४२५१५५८३६

मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. ०९३७३१२११६४

सम्पादक एवं उपप्रधान
जयसिंह गायकवाड़, जबलपुर
मो. ०९४२४६८५०९१
निवास - ५८०, गुप्तेश्वर वार्ड, कृपाल चौक,
मदन महल, जबलपुर

सह सम्पादक
पं. सुरेन्द्रपाल आर्य, नागपुर
मो. : ०९९७००८००७४

सह संपादक एवं कार्यालय मंत्री
अशोक यादव, नागपुर
मो. : ९३७३१२११६३

कार्यालय पता :
दयानन्द भवन, मंगलवारी, सदर बाजार,
नागपुर-४४०००१ महाराष्ट्र
दूरभाष क. ०७१२-२५९५५५६

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख	लेखक	पृष्ट क्र.
१.	वैदिक विनय	अभयदेव विद्यालंकार	२
२.	सम्पादकीय		४
३.	वैराग्य	आचार्य विद्यादेव	५
४.	गुरू और उसका महत्व	महात्मा चैतन्य मुनि	६
५.	भारतीय संस्कृति.....	डॉ. गंगाशरण आर्य	८
६.	काव्य सलिला-वाणी संयम	ओमप्रकाश बजाज	९
७.	हिन्दी हिन्दी....	जाहिद खान	१०
८.	स्फुट विचार	डॉ. गणेश बोरले	११
९.	तीर्थ यात्रा...	अजय टकारांवाला	१३
१०.	जीवन को सार्थक	अशोक यादव	१४
११.	कैसी हो हमारी दिनचर्या	आचार्य बालकृष्ण	१५
१२.	ओ३म् परमात्मा का	डॉ. धर्मवीर सेठी	१८
१३.	ऋषि दयानन्द विष.....	ओममुनि	२०
१४.	आर्य जगत के समाचार		२१
१५.	सभा क्षेत्र की सूचनाएं व समाचार		२२
१६.	डॉ. सुरेन्द्र कुमार.....	जयसिंह गायकवाड़	२३

www.thearyasamaj.org

वेदों के प्रति आकर्षण के कुछ बिन्दु

आइए वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर कुछ विचारों को दुहरा लेवें ।

आर्ष मान्यताओं के अनुसार वेद परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान का सनातन भण्डार है । वेदों को श्रुति भी कहा जाता है जिसका अर्थ होता है पीढ़ियों से सुनसुन कर प्राप्त किया गया ज्ञान । लिपि व छपाई के अभाव में इसी प्रकार वेद ज्ञान का अर्जन किया जाता रहा है । सृष्टि आरम्भ से यह क्रम चलता रहा । बाद में वेद लिपिबद्ध हुए । आज के विद्वान मानते हैं कि वेद सब से प्राचीन ग्रंथ है । यह 35 हजार वर्ष पूर्व का मानते हैं । वेद से प्राचीन और कोई साहित्य शायद ही उपलब्ध हो तो वेद प्राचीनतम हैं इसमें कोई विवाद की स्थिति नहीं है । इतनी लम्बी अवधि से हमारी ज्ञान पिपासा वेद ही तृप्त कर रहे हैं । आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि प्राचीन होने के साथ-साथ इनकी प्रासंगिकता में कोई कमी नहीं है । वेद ज्ञान शाश्वत है यह सहसा समझा जाता है ।

जीवन चाहे व्यक्तिगत हो या सामाजिक कुछ बहुमूल्य मूल्यों के आधार पर चलता है । इन मूल्यों का भण्डार है वेदों में । आईए एक विहंगावलोकन कर लें ।

आज संसार भर में मारकाट, साम्प्रदायिक आतंकवाद, नक्सलवाद, आदि का ताण्डव चल रहा है । सर्वधारण बुरी तरह प्रभावित है तथा किंकर्तव्यविमूढ़ है । ऐसा क्यों ? इसके मूल में जाएं तो हम पाते हैं कि मौलिक सिद्धान्तों को भूलने के कारण ही ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई है । यदि हम अथर्ववेद के मंत्र "माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या" की भावना के अनुसार पृथ्वी के रहवासी हमारे भाई बंधु हैं । ऐसे में न कोई वाद विवाद रह जाएगा और न वैर व हिंसा रह जाएगी ।

छोटे बड़े का भेद, जाति, लिंग, भाषा, देश आदि का भेद में आज समाज जल रहा है । वेद कहता है 'सहृदयं सामंनस्य विद्वेषं कृणोमि, वः' इस भावना से कोई भेद -भाव कहां रहेगा ।

संयुक्त राष्ट्र संघ के एक बृहदधिवेशन में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वं इन्दिरा गांधी ने ऋग्वेद के अंतिम मंत्रों का पाठ कर खूब वाहवाही लूटी थी । क्या इन मंत्रों के भावों का पालन करके हम शान्ति और विश्व बंधुत्व की ओर अग्रसर नहीं हो सकते हैं ? क्या "द्यौ शान्ति अन्तरिक्षम् शान्ति" की प्रार्थना ईश्वर से करके संसार में शान्ति का वातावरण, प्रेम का वातावरण नहीं बना सकते हैं ?

आज पर्यावरण इतना बिगड़ गया है कि ओजोन, में छिद्र पड़ने क बात सर्वत्र आती है । हमें स्मरण आते ही महर्षि दयानन्द के बहुमूल्य विचार "आर्यवर शिरोमणि महाराज, ऋषि महर्षि, राजे महाराजे लोग बहुत सा होम करते कराते थे । जब तक इस होम का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था । अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए ।" आवश्यकता है इनके अनुसार कार्य हो ।

मध्यकाल में 'नारी नर्कस्य द्वारं' का भ्रान्त विचार फैल रहा था । इस विचार के प्रसार करने वाले शायद वेद ज्ञान से विमुख थे । उनके ध्यान में ऋग्वेद की ऋचा 'धर्मार्थ काम मोक्ष वित्' नहीं आया । या तो अपने विचारों को पिष्टपेशन करने के लिए उन्होंने इसे जानबूझ कर नज़र अन्दाज किया । राष्ट्रीय प्रार्थना में तो हम गाते हैं 'आधार राष्ट्र की हों नारी सुभग सदा' ।

समाज का उत्थान कैसे होगा इसके लिए वेद की ऋचा ' मित्रस्याहं सर्वाणि भूतानि समीक्षे' सहज ही हमारा पथ प्रदर्शन करती है । वेद मानव मात्र के लिए प्रेम, सहानुभूति एवं अभ्युदय का संदेश देता है । आइए धर्म के सम्बंध में वेद क्या कहता है जानें इस मंत्र से 'धर्मेण पृथिवी धृता ।' आइए यजुर्वेद के मंत्र यस्मिन सर्वाणि भूतानि आत्मैवा भूत विजानता तत्र को मोहः क शोकः एकत्वं अनुपश्यतः' तात्पर्य यह है कि जब ज्ञानी व्यक्ति सब प्राणियों को आत्मवत जानने लगता है तब कैसा मोह व कैसा शोक ।

मानवीय आचार के सम्बन्ध में कितने सुन्दर रूप से वेद इंगित करता है ' मा गृधः कस्य स्विद्धनम् । '

अपने विचारों का विराम देते हुए मैक्समूलर के शब्दों में कहना चाहेगें "स्वामी दयानन्द के लिऐ वेद में लिखित प्रत्येक बात न केवल पूर्णतया सत्य है अपितु इससे भी आगे गए । वे वेद की व्याख्या से दूसरों को यह निश्चय कराने में सफल हुए कि प्रत्येक जानने योग्य बात वेद में पायी जाती हैं ।

एक कवि की निम्न पंक्तियों के द्वारा हम समारोप करते हैं -

वैदिक तरू की छाया के नीचे मानव आओ !
पीकर श्रुति पीयुष सनातन
निज मानस के ताप मिटाओ ।
जिसके कारण गूंज थी विश्व में भारत महान की
आएं मिलकर बढ़ाएं उससे ज्ञान भारत महान की ।

जयसिंह गायकवाड़

www.thearyasamaj.org

वैराग्य

आचार्य विद्यादेव

वयं येभ्यो जाताश्चिरतरगता एवं खलु ते
समं पैः संवृद्धाः स्मरण पदवीं तेऽपि गमिताः ।
इदानीमेते स्मः प्रतिदिवसमासन्नपतना
गतास्तुल्यावस्थां सिकतिलनदीतीर तरूभिः ।।

जिनसे हमने जन्म लिया था, वे तो कब से ही परलोक चले गए और जिनके साथ बढ़कर हम बड़े हुए थे वे भी परलोक वासी हुए, अब हम रहे सो प्रतिदिन अब गिरें, अभी पड़ें ऐसी अवस्था वाले हम भी बालुका वाली नदी के किनारे पर खड़े हुए वृक्ष के समान हो रहे हैं ।

पूर्व काल में बहुत विस्तृत पृथ्वी का स्वामी एक राजा था । वह सब बातों से परम सुखी था । धन, धान्य, पुत्र, पौत्र आदि सन्तानों, राज्य सेना, कुटुम्ब, मित्र तथा ऐसी सभी वस्तुओं से वह भरपूर था । किसी बात का दुख नहीं था ।

एक दिन वह रात को रंगमहल में सो रहा था। उस समय उसको विचार उत्पन्न हुआ कि अहो मुझसा सुखी कौन होगा? मुझको इस समय सर्व पदार्थ प्राप्त हैं । वे सभी अनुकूल भी हैं । दुख का लेश भी नहीं है । ऐसे विचार तरंग में वह अपने सुखों का वर्णन करने वाला एक श्लोक महल की दीवाल पर लिखने लगा ।

चेतोहरा युवतयः सुहृदोऽनूकूलाः सद्बान्धवाः
प्रणतिर्गर्भगिरश्च भृत्याः । गर्जन्ति
दन्तिनिवहास्तरलास्तुरंगाः .....।।

हमारे महल में तरूण स्त्रियाँ हैं । अनुकूल मित्र हैं । श्रेष्ठ भाई बन्धु भी हैं, आज्ञाधीन और नम्रवाणी बोलने वाले नौकर चाकर हैं । हाथी गर्जना कर रहे हैं । घोड़े कूद रहे हैं ।

ऊपर लिखे हुए श्लोक के तीन चरण तो राजा ने दीवाल पर लिख दिए । परन्तु चौथा चरण कैसे पूरा करना चाहिए, इसका विचार करने लगा । उस समय रात बहुत हो गयी थी । इससे राजा को नींद सताने लगी । बाकी का श्लोक दूसरे दिन पूरा करने के विचार से उस श्लोक को अधूरा ही छोड़कर राजा सो गया ।

उसी नगर के एक ब्राह्मण पुत्र को चोरी करने की आदत पड़ गयी थी । उसका पिता बड़ा विद्वान् होने से उसने अपने पुत्र को चोरी करने से रोकने के लिए, कर्म फल तथा धर्म शास्त्रादि ग्रन्थ अच्छी तरह से पढ़ा दिए थे और अमुक वस्तु की चोरी करने से अमुक पाप लगता है । अमुक पदार्थ चुराने वाले को भगवान् अमुक दण्ड देता है । इन विषयों का चोर पुत्र के अन्तः करण में पूरी तरह से बैठा दिए थे । केवल इसी लिए कि ऐसा जानने पर भयभीत होकर वह (पुत्र) चोरी करना छोड़ देगा ।

पुत्र भी पढ़ लिख कर अपने पिता के समान ही विद्वान् हो गया था । परन्तु उसकी चोरी करने की आदत जो पहले से पड़ी हुई थी वह नहीं छूटी । उसी रात्रि में वह ब्राह्मण पुत्र चोरी करने को निकला । रात्रि में चोरी करने के बहाने घूमते-घूमते वह विद्वान् चोर अवसर पाकर राजा के महल में चोरी करने को घुस गया । महल में इधर-उधर घूमकर उसने देखा, परन्तु क्या चुराना चाहिए वह समझ न सका । राजा के महल में कोई भी वस्तु निकम्मी, निरर्थक नहीं थी । परन्तु स्वर्ण चुराने में अमुक दोष है, जवाहारात लेने में अमुक दोष है, चाँदी चुराने में धर्मशास्त्र में अमुक दोष लिखा है इसी विचार ही विचार में वह कोई वस्तु नहीं चुरा सका । फिर वह चुरा लेने योग्य निर्दोष वस्तु को खोजता-खोजता राजा के पलंग के पास गया । राजा तो गाढ़निद्रा में सो रहा था । उसने चारों ओर देखा तो दीवाल पर लिखा हुआ वह अधूरा श्लोक उसको दिखाई दिया । तब उस विद्वान् चोर ने विचार किया कि चलो इसकी पूर्ति तो कर दें । इससे उसने तीन चरणों के साथ चौथा लिख दिया -

सम्मीलने नयनयोर्नहि किञ्चिदस्ति ।।1।।

" दोनों आँखें बन्द हो जाने पर इनमें से कुछ भी तेरा नहीं ।" अर्थात् सब कुछ यहीं पड़ा रह जाता है और व्यक्ति संसार से चला जाता है । इस श्लोक के चारों चरण पूरे हो जाते हैं ।

तदनन्तर जिस वस्तु के चुराने में कुछ भी दोष नहीं लगे, ऐसे चने के छिलके जो घुड़शाला में रखे थे उनको लेकर वहाँ से बाहर निकल गया ।

प्रातः काल उठते ही राजा ने दीवाल पर देखा तो अधूरे श्लोक को पूरा हुआ देखा । वह भी अन्त का चतुर्थ चरण हृदय भेदन करने वाला देखा । राजा का मन अत्यन्त प्रफुल्लित हुआ । उसने समझ लिया कि सचमुच जब मेरा अन्त काल आयेगा तब इनमें से कोई वस्तु मेरे साथ नहीं आयेगी । तब मुझको इनके लिए मिथ्या मोह क्यों करना

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

www.thearyasamaj.org

गुरू और उसका महत्व

-महात्मा चैतन्यमुनि

क्रियायोग का अन्तिम चरण है 'ईश्वर-प्रणिधान' । मुख्य रूप से इसका भाव है मन,वचन और कर्म से परमात्मा के प्रति समर्पित रहना । ऋषि-मुनियों के ग्रन्थों का स्वाध्याय न करने के कारण आज व्यक्ति अनेक प्रकार के पाखण्डों में फंस गया है । समर्पण भी आज परमात्मा के प्रति नहीं बल्कि मनुष्यों के प्रति हो रहा है । आज प्रतिदिन पैदा होने वाले तथा कथित गुरूओं ने पाखण्ड का ऐसा जाल फैला रखा है कि व्यक्ति को परमात्मा से बहुत दूर ले जाकर भटका दिया है । ये गुरू सर्वप्रथम व्यक्ति को प्राचीन ऋषि-मुनियों के ग्रन्थों के स्वाध्याय से उपराम कर देते हैं और फिर जी भर कर अपने पाखण्ड को फैलाते हैं । वेदादि सत्य शास्त्रों के अध्ययन के गर्त में युगों-युगों तक भटकने के लिए छोड़ देते हैं । हमारा यह मानना है कि जो गुरू अपने चेलों को प्राचीनतम वैदिक तथा महर्षियों की परम्पराओं से हटाकर नया मत चलाता है, नयी उपासना पद्धति तथा गुरूमन्त्र देता है वह निश्चित रूप से पाखण्डी है । हमारा इतिहास बताता है कि योगेश्वर श्री कृष्ण महाराज तक किसी भी नई परम्परा को प्रश्रय नहीं मिला । वे सभी योगी तथा ऋषि-मुनि एक स्वर से वैदिक मान्यताओं को सत्य मानकर एक ही गायत्री महामन्त्र तथा परमात्मा के नाम ओम् का जाप करने की प्रेरणा देते रहे हैं । आज तो हजारों ही नए-नए मन्त्रादि देने वाले तथा कथित गुरू पैदा हो गए हैं । दीक्षा देने के नाम पर भी बहुत पाखण्ड और आडम्बर किया जाता है तथा अकल के अन्धे और गांठ के पूरे लोगों से मनमानी धनराशि प्रप्ति करते हैं । मानों आज यह एक अच्छा-खासा व्यापार ही हो गया है । हमने देखा है कि कुछ तथाकथित गुरू कार्यक्रम देने के लिए एक निश्चित राशि की मांग

शेष भाग अगले पृष्ठ पर ....

चाहिए? किन्तु मुझकों इस मोह निद्रा में से यह श्लोक पूरा करके जगाने वाला कोई विद्वान् महाविद्वान् होना चाहिए । वह कौन होगा?

उसको देखने की उत्कण्ठा से राजा ने नगर में ढोल पिटवाकर श्लोक लिखने वाले उस द्विज पुत्र को बुलाकर बहुत इनाम दिया और संसार से वैराग्य उत्पन्न हो जाने के कारण तत्वोपदेश लेकर उसी क्षण से राजा ने अपना शेष जीवन वैराग्य भाव से व्यतीत किया ।

एक वह मानव है जो अपने महल से गाड़ी में बैठकर चलता है । चलते हुए वह देखता है कि कुछ लोग अपने कन्धों पर कुछ उठाकर ले जा रहे हैं । वह सारथी से पूछता है कि ये लोग क्या उठाये लिए जा रहे हैं? वह उत्तर देता है कि ये लोग शव अर्थात् मुर्दे को लिए जा रहे हैं ।

फिर वह पूँछता है कि शव-मुर्दा किसे कहते हैं ? सारथी उत्तर देता है कि यह मनुष्य मर गया है यह चल नहीं सकता, हाथों से पकड़ नहीं सकता, बोल नहीं सकता और समझ नहीं सकता ।

फिर पूछता है इस मुर्दे का क्या बनेगा ? सारथी कहता है कि भस्म बना दी जायेगी । वह फिर पूछता है यह स्थिति मनुष्य तक है क्या? सारथी कहता है कि जो जन्मा है उसकी अन्त गति यही होती है ।

फिर पूछता है कि क्या मेरे लिए भी? सारथी उत्तर देता है कि हाँ आपके लिए भी अन्त गति यही होगी ।

फिर वह सारथी से कहता है गाड़ी लौटाओं मुझे सैर नहीं करनी है । अपने महल पर पहुँचकर उसे सदा के लिए त्यागने की इच्छा पैदा हुई । वे मानव महात्मा बुद्ध थे । उनकी इस वैराग्य की ज्योति पर एक कालिमा की रेखा धुएँ की रेखा आ गयी । उनका नवजात पुत्र उत्पन्न हुआ था । जिसका आगे राहुल नाम प्रसिद्ध हुआ था । विचार आया उसका मुख तो देखता चलूँ । पुत्र के मुख दर्शन का सुख गृहस्थियों को होता है । इस बात की लोगों को जानकारी है । किन्तु वैराग्य की ज्योति फिर तीव्र हो उठी, उसने धुएँ की रेखा को खा लिया । बुद्ध के अन्दर विचार आया कि इस थोड़ी सी बात के लिए अपने लक्ष्य से पीछे हटता है लौटता है तो फिर न जाने जीवन में कितनी बार लौटना पड़ेगा ।

इसी प्रकार महर्षि दयानन्द (मूल शंकर) के जीवन में भी मृत्यु को देखकर मृत्यु की ज्योति जाग गयी थी । प्यारी बहिन की मृत्यु उनके सामने हुई थी । चाचा का देहान्त उनके सामने हुआ था ।

अन्त समय को देख दयानन्द घर से वन का जाता ।
निश्चय अपना किया जगत में किससे किसका नाता ।।

इस प्रकार दयानन्द के वैराग्य की ज्योति पर कोई धुएँ की रेखा नहीं आयी । चलते समय उनके अन्दर यह विचार नहीं आया कि मैं माता का फिर से मुख देखता चलूँ । जैसे ही वैराग्य की ज्योति को धारण करके गाँव को छोड़ा, न फिर पीछे मुँह मोड़ा ।

टंकारा (गुजरात)
मो.नं.- ०९८७९५८७७५६

www.thearyasamaj.org

करते हैं और यदि जनता से अधिक पैसा एकत्रित हो जाए तो वह आयोजकों को दे दिया जाता है। इससे ये गुरू भी प्रसन्न हो जाते हैं और आयोजकों के भी बारे-न्यारे हो जाते हैं। कई स्थानों पर तो देखा गया है कि गुरू महाराज के प्रवचन के बाद दीक्षा देने के लिए गुरू के एजैटों द्वारा लोगों को ऐसे पकड़-पकड़ कर लाया जाता है जैसे बड़ी-बड़ी दुकानों के नौकर ग्राहकों को पकड़कर लाते हैं।

हमने देखा है कि प्रत्येक नए मत का गुरू अपने शिष्यों को नया ही मन्त्र देता है क्योंकि यदि पुराना दे दिया जाए तो उनकी दाल कैसे गलेगी। जैसा कि हमने पहले कहा उपनिषदों आदि के ब्रह्मावेता ऋषियों ने अपनी कोई भी नई परम्परा नहीं चलाई है। बल्कि वे कुछ बात जिज्ञासुओं से कहते भी थे तो साथ ही यह बात भी कह देते थे कि ऐसा हमने अपने से पूर्व आचार्यों से सुना है.....कितनी विनम्रता थी उन लोगों में.....मगर आज यदि कोई गुरूमन्त्र देता है तो साथ ही कह देता है कि यह किसी और को न बताना नहीं तो इसका असर कम हो जाऐगा। यह तक भी कह दिया जाता है कि गुरू की निन्दा नहीं सुननी है अन्यथा इससे बहुत बड़ा पाप लगेगा। इस प्रकार ये लोग पूरी तरह से व्यक्ति के स्वतन्त्र चिन्तन को कुण्ठित कर देते हैं तथा अपना गुलाम बना देते हैं। उस बेचारे चेले की प्रगति ही रूक जाती है क्योंकि अब वह किसी के पास भी ज्ञान प्राप्त करने के लिए नहीं जाएगा और न ही गुरू की निन्दा सुनेगा.....न ही किसी प्रकार का तर्क करेगा.....गुरू इस प्रकार का प्रतिबन्ध या भय इसलिए दे देते हैं ताकि उनके अज्ञान की पोल न खुल जाए.....या वह व्यक्ति किसी और को गुरू न बना ले.....और यदि दूसरे को मन्त्र बता दिया तो गुरू की अपनी महत्ता कम हो जाऐगी। यह भी एक आश्चर्य की बात है कि गुरू उस पर ही कृपा करता है जो उसका विधिवत् चेला बन जाए बाकियों पर वह कृपा क्यों नहीं करता है.....? उन तथाकथित गुरूओं से पूछा जाना चाहिए कि वे ऐसा मन्त्र देते ही क्यों हैं जो इतना कमजोर है कि किसी को बताने मात्र से ही उसकी शक्ति समाप्त हो जाए।

वास्तविकता यह है कि ये तथाकथित गुरू अपने चेलों को मूर्ख बनाते हैं तथा अज्ञानी लोग मूर्ख बन भी जाते हैं। अपनी बात सत्य सिद्ध करने के लिए इनके पास न तो कोई आधार ही है न कोई लॉजिक और न ही कोई तर्क। बस जो गुरू ने कह दिया वही प्रमाण मानने की बात कही जाती है। आगे से कोई सवाल कर दे तो उसे गुरू की अकृपा का पात्र बता दिया जाता है। ये लोग व्यक्ति की बुद्धि को तो एकदम कुन्द करके ही रख देते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि ऐसे तथाकथित गुरू सर्वप्रथम सत्य का खण्डन करते हैं क्योंकि जो ऐसा न करें तो उनका असत्य कभी नहीं चल सकता है।

गुरू शब्द की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश के पहले ही समुल्लास में लिखते हैं -'गृ शब्दे इस धातु से गुरू शब्द बना है। **'यो धर्म्यान् शब्दान् गृणात्युपदिशति स गुरूः' 'स पूर्वेषामपि गुरूः कालेनानवच्छेदात्'** योग.। जो सत्यधर्म प्रतिपादक, सकल विद्यायुक्त वेदों का उपदेश करता, सृष्टि की आदि में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा और ब्रह्मादि गुरूओं का भी गुरू और जिसका नाश कभी नहीं होता, इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'गुरू' है। इस सूत्र का भाष्य करते हुए महर्षि व्यास जी लिखते है- **'पूर्वे ही गुरवः कालेनावच्छिद्यन्ते। यत्रावच्छेदार्थेन कालो नोपावर्तते स एष पूर्वेषामपि गुरूः। यथाऽस्य सर्गस्याऽऽदौ प्रकर्षगत्या सिद्धस्तथाऽतिकान्तसर्गादिष्वपि प्रत्येतव्यः।।** हमारे पूर्ववर्ती गुरू तो काल से अवच्छिन्न-सीमित होने से नष्ट हो जाते हैं। जिस ईश्वर में अवच्छेदार्थक-नाश का हेतु काल उपस्थित नहीं होता, वह यह ईश्वर पूर्वज ऋषि-महर्षियों का भी (अग्नि आदि का भी) गुरूः-ज्ञान धर्म का उपदेष्टा है। जैसे इस सृष्टि के आदि में प्रकर्षगत्या-प्रकृष्ट ज्ञानादि के कारण सिद्ध है, वैसे पिछली सृष्टियों के आदि में भी जानना चाहिए।' महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास में लिखते हैं- 'जैसे वर्त्तमान समय में हम लोग अध्यापकों से पढ़ के विद्वान होते हैं, वैसे परमेश्वर सृष्टि के आरंभ में उत्पन्न हुए अग्नि आदि ऋषियों का गुरू अर्थात् पढ़ानेहारा है। क्योंकि जैसे जीव सुषुप्ति और प्रलय में ज्ञान रहित हो जाते हैं, वैसा परमेश्वर नहीं होता। उसका ज्ञान नित्य है। इसलिए यह निश्चिय जानना चाहिए कि बिना निमित्त से नैमित्तिक अर्थ सिद्ध कभी नहीं होता।' परमात्मा को ही परम गुरू मानने के बारे में वे ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में लिखते हैं- '..... जो कि प्राचीन अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा और ब्रह्मादि पुरूष सृष्टि की आदि में उत्पन्न हुए थे, उन से लेके हम लोग पर्यन्त और हम से आगे जो होने वाले हैं, इन सबका गुरू परमेश्वर ही है, क्योंकि वेद द्वारा सत्य अर्थों का उपदेश करने से परमेश्वर का नाम गुरू है।' इसलिए जहां तक ईश्वर प्रणिधान के अन्तर्गत समर्पण की बात है, यह समर्पण उस परमगुरू परमात्मा के ही प्रति होना चाहिए न की किसी व्यक्ति के प्रति। इस सम्बन्ध में बहुत साफ कहा गया है- **ईश्वरप्रणिधानं सर्वक्रियाणां परमगुरावर्पणं तत्फलसंन्यासो वा।।** (यो.द.2-1) अर्थात् सब क्रियाओं का परमगुरू परमात्मा में अर्पण तथा उनके फल की इच्छा न करना ईश्वर प्रणिधान कहलाता है। इस सूत्र के बारे में महर्षि दयानन्द जी ने भी स्पष्ट किया है- '.....सब सामर्थ्य, सब गुण, प्राण, आत्मा और मन के प्रेमभाव से आत्मादि द्रव्यों का ईश्वर के लिए समर्पण करना।

-वैदिक वशिष्ठ आश्रम, महादेव,
सुन्दरनगर, जि.मण्डी, (हि.प्र.)

www.thearyasamaj.org

गंताक से आगे

भारतीय संस्कृति के विनाश का पहला और बड़ा कारण अन्धश्रद्धा

डॉ.गंगाशरण आर्य

हम उससे कभी भी किसी भी पल प्रार्थना, उपासना कर सकते हैं। अब केवल और केवल ज्ञान की दूरी हमारे बीच रूकावट है ज्ञान की दूरी तभी दूर हो सकती है जब हम अपने अंदर छिपे अज्ञान को मिटा देंगे। अज्ञान कहते हैं असत्य विद्या को और जो सत्य विद्या है अर्थात् जो वस्तु जैसी हो उसको वैसा ही मानना और कहना सत्य है, वही सद्ज्ञान है। वही सत्यज्ञान हमें धारण करने में सदैव उद्यत रहना चाहिए और असत्य विद्या को छोड़ने में भी सदैव तत्पर रहना चाहिए। यही महर्षि दयानन्द का मन्तव्य है कि आप जो पौराणिकता के पाखण्ड के जाल में फंसे हैं उसे त्यागकर सच्चे ईश्वर को जानें और फिर मानें, अंधानुकरण न करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती उच्च ब्राह्मण कुल में जन्मे थे उन्हें क्या पड़ी थी कि किसी को सत्य बताएं, वे भी अन्य पाखण्डियों-पण्ड़ो की भाँति खूब पेट भरते और विवाह कर गृहस्थी बनते, पाँच-सात बच्चे पैदा कर उनके लिए धन-वैभव जोड़ लेते लेकिन नहीं उन्होंने अपने जीवन में सत्य की खोज की, सच्चे ईश्वर को जाना और हमें सत्य सनातन वेद ज्ञान की ओर लौटने के लिए प्रेरित किया। जो सत्य को ग्रहण कर लेता है फिर उसके समक्ष कितनी भी बड़ी विपत्तियां आ जाएं, बड़े से बड़े दुःख को सहजता से झेल जाता है उफ तक नहीं करता। तो आइए ! अपने अंदर पनप रहे इस अंधविश्वास की जड़ों को उखाड़ने का प्रयास करें जब तक आपका अंधविश्वास नहीं टूटेगा जड़ें गहरी होती जाएंगी। आप जैसे अनेक पौराणिक लोग जो पण्डितों और गुरूओं के बहकावे में है वें कहते हैं मूर्ति पूजा के प्रति हमारी श्रद्धा है। एक कहावत भी है "मानो तो देव नहीं तो पत्थर" लेकिन जो जैसा है उसको वैसा ही मानना बुद्धिमानों का काम है तो पत्थर को पत्थर ही मानना चाहिए देव नहीं। क्या श्रद्धा से अथवा मानने से भगवान मिलते हैं? क्या जिसमें श्रद्धा कर लो वही भगवान है? ऐसा विचार करना हमारी भूल है तो विचार कीजिए निम्न बातों पर - क्या तेजाब को जल मान लेने से जल बन जायेगा? क्या गोबर को खीर समझने की श्रद्धा करें तो गोबर खीर बन जाएगी? क्या कलम में बंदूक की श्रद्धा करें तो कलम बन्दूक बन जाएगी? क्या बजरी को चीनी समझने की श्रद्धा करें तो चीनी बन जाएगी? क्या मदिरा अर्थात् शराब में दूध की श्रद्धा करें तो शराब दूध बन जाएगा? शेर को गीदड़ समझकर उसके सामने जाओ, क्या शेर गीदड़ बन जाएगा और छोड़ देगा? यदि हम बल्ब को अज्ञानतावश या अपनी आस्था या श्रद्धा मानकर सूर्य समझने लगें तो क्या वह सूरज बन जाएगा? ऐसा कभी नहीं हो सकता। क्या कागज के फूलों से कभी सुगंध आती है? क्या बिल्ली नकली चूहे पर झपटती है? यदि मांस खाना ही श्रद्धा है तो अपने बच्चे का मांस खाएंगे आप? यदि बलि चढ़ाना ही आपकी श्रद्धा है तो क्या अपने किसी प्रियजन की बली चढ़ाना पसंद करेंगे? सृष्टि कभी मानव के हाथों से बन नहीं सकती, यदि बन सकती तो किसी को भी अंधी, लंगड़ी या मृत संतान नहीं होती। शराबी या मांसाहारी अपनी भावना अर्थात् श्रद्धा व आस्था के कारण ही तो मांस खाता या शराब पीता है, तो क्या उसकी यह भावना एवं आस्था उचित एवं अनुकरणीय है? उज्जैन के काल भैरव मन्दिर में सर्वदा चढ़ावे के रूप में शराब की बोतलें अर्पित की जाती हैं। कहीं-कहीं तो मांस भी अर्पित किया जाता है क्या ये ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा है? अपनी आस्था व श्रद्धा के कारण अनेक बाँझ स्त्रियाँ पाखण्डियों पर अंधविश्वास कर दूसरों के बच्चों की बलि कर देती हैं क्या ये उनकी आस्था, उनका अंधविश्वास सही है? क्या भारत आज जिस दौर से गुजर रहा है उसका एक बहुत बड़ा कारण हमारी अन्धश्रद्धा,हमारी गलत आस्था व भावना नहीं है? सोचिए जरा! केवल और केवल एक अकेली मूर्ति पूजा में अपनी श्रद्धा का परिणाम देखिए। वेदों में स्पष्ट है "**न तस्य प्रतिमा अस्ति**" अर्थात् उस ईश्वर की कोई प्रतिमा या मूर्ति ही नहीं है। पहले यज्ञशालाएँ होती थी। लगभग 2600 वर्ष पहले मूर्ति पूजा का आरम्भ हुआ, मन्दिर बने, उनमें यज्ञवेदियों के स्थान पर सोने, चाँदी, कांस्य व अन्य धातुओं की मूर्तियों की स्थापना की गई। मन्दिरों में चढ़ावे के स्वरूप हीरे, मोती, रत्न, माणिक्य, पन्ना, पुखराज आदि आने लग। कालान्तर में जब विदेशियों को पता चला तो उन्होंने आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिए। लोगों का रक्त बहाया। स्त्रियों की अस्मिता लूटी गई। मोहम्मद बिन कासिम, सुबुक्तगीन, गजनबी, तैमूरलंग, गौरी, बाबर आदि ने यहाँ लगभग 600-700 वर्षों तक खून की नदियां बहाई, लाखों मन्दिरों, महलों को ध्वस्त किया। यह सब उन मन्दिरों में अथाह धन-सम्पत्ति के कारण हुआ। आज भी इसका उदाहरण पद्मनाभ का मन्दिर जो दक्षिण भारत में विद्यमान है, एक लाख करोड़ रूपये के लगभग उसमें हीरे-मोती-स्वर्ण आदि है। ऐसे ही जब सोमनाथ का मन्दिर तोड़ा गया तो सन् 1001 में उसमें सैंतालिस सौ करोड़ रूपये के हीरे-जवाहरात व आभूषण मिले थे। आज उनका मूल्य क्या होगा? ये सब मूर्ति पूजा में श्रद्धा के कारण ही तो है।

इसी अविद्या के कारण सिन्ध के राजा की हार हुई। वह

www.thearyasamaj.org

अत्यन्त साहसी एवं बलवान योद्धा था उसने कभी हार नहीं मानी बस मोहम्मद बिन कासिम और मन्दिर के पुजारी की मिली भगत से अन्धविश्वास का आश्रय लेकर ही हार हुई । अन्यथा सेना को हराना टेढ़ी खीर है । कासिम को जब यह बात पता चली तो वह ब्राह्मण का वेश धारण कर सिंध के उस मन्दिर पर आ गया और पुजारी से युद्ध के समय झंडा झुका देने और जीतने पर आधा राज्य पारितोषिक स्वरूप देने को कहा । इस छल के कारण सिंध के राजा दाहिर की पराजय हुई थी । झंडा झुका देने से सेना का मनोबल अंधविश्वास के कारण टूट गया । दाहिर अकेला पड़ गया यह सब अवैदिक ज्ञान व अन्ध विश्वास के कारण ही तो हुआ । आखिर अपने हृदय से पूछें क्या मूर्ति पूजा परमात्मा को पाने के लिए की जाती है? सत्य तो यह है कि परमात्मा को साकार वस्तुओं के माध्यम से नहीं पाया जा सकता । मूर्तियों से तो भगवान का बनाया हुआ मनुष्य, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि का साकार रूप अच्छा जिनको देखकर मन स्थिर किया जा सकता है पर ऐसा नहीं होता । हर रोज हमारा मन इन साकारों को देखकर भी चंचल होता है, कलुषित होता है तो स्पष्ट है मन को, बुद्धि को, हृदय को साकर की आवश्यकता नहीं । जरा सोचिए, जब मन्दिर के भगवान को साकार रूप दे ही दिया तो पूजा अर्चना के समय आंखे बन्द करके क्यों बैठते हैं? टकटकी लगाकर निरन्तर उसे देखते क्यों नहीं?

प्रिय पाठकों! मूर्ति पूजन करने वाला मन्दिर में स्थित मूर्ति से मन्दिर में थोड़ा भय खाएगा अन्यत्र स्थान पर नहीं क्योंकि उसके लिए तो भगवान मन्दिर में ही रहता है परिणाम स्वरूप एकान्त पाकर खूब कुकर्म करेगा, क्योंकि वह जानता है कि परमात्मा तो मन्दिर में है मुझे देख नहीं रहा । मूर्ति पूजक तो नास्तिक है, आस्तिक तो परमात्मा को कण-कण में मानने वाला है । अतः वह पाप कर्मों से स्वयं को बचा लेता है ।

अतः पाठकों से निवेदन है मेरी बात को अन्यथा न लेकर अपने भीतर के ईश्वर को जानो तथा बाहरी दिखावा बन्द करो, मेरा मूर्ति पूजा के खण्डन का प्रयोजन किसी भी प्रकार से किसी के मन को दुखाना नहीं अपितु सत्य ज्ञान की ओर प्रेरित करना है । यदि उपरोक्त लेख के माध्यम से आपके अंदर सच्चे ईश्वर के प्रति थोड़ी सी भी सच्ची श्रद्धा उत्पन्न होकर आप इस अन्धकूप से निकलने का प्रयास करेगें तो मैं अपनी इस लेखनी को सार्थक समझूंगा ।

ग्रा. शाहबाद मुहम्मदपुर, न. दि.-६१

.....***.....

- काव्य सलिला -

वाणी संयम

ओमप्रकाश बजाज

बहुत समय नहीं हुआ जब
वाणी संयम को
बहुत महत्व दिया जाता था.
पहले तौलो फिर मुंह से बोलो
बचपन में ही सिखाया समझाया जाता था.
बिना सोचे समझे अनर्गल बोलने वाला
लबरा और लबार कहलाता था.
समाज में हीन दृष्टि से
देखा जाता था.
युग परिवर्तन हुआ है.
अब आम जन कम
तथाकथित नेता संत सत्ताधारी अधिक
बेतुके बेहूदा बाजारू बयान देते हैं.
अमर्यादित द्विअर्थी कामक भाषा बोलते हैं
वह भी पब्लिक प्लेटफार्म से
कन्याओं महिलाओं की उपस्थिति में
हो हल्ला मचने पर
बजाय झेंपने के खेद जताने के
कुतर्क देते हैं और स्वयं को
सही ठहराने पर उतर आते हैं.
बचाव का कोई रास्ता न रहने पर
कहीं से भी कोई समर्थन न मिलने पर
मात्र खानापूर्ति भर के लिए
टंटा मिटाने की गरज से
खेद व्यक्त कर छुट्टी पा लेते हैं.
क्या हमारे सामाजिक पतन का
यह नया रूप
ऐसे ही विस्तार पाता जाएगा?
क्या ऐसे तत्वों की जिव्हा पर
उचित नियन्त्रण हेतु
हमारे समाज का जागरूक वर्ग
समाने नहीं आएगा?

बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001 म.प्र.

www.thearyasamaj.org

हिन्दी-हिन्दी करने से नहीं होगा - कुछ लड़ना पड़ेगा

जाहिद खान

हमारे देश में आजादी के बाद अपनी व्यापकता के चलते हिन्दी को यदि राजभाषा का दर्जा हासिल हुआ तो यह स्वाभाविक परिणति थी, लेकिन व्यवहार में यह फैसला कभी अमल में नहीं आ पाया। हकीकत यह है कि प्रशासनिक कामकाज से लेकर अदालतों तक में अंग्रेजी का ही बोलबाला है। आज हिन्दी को लेकर शिक्षण संस्थानों से लेकर सरकारी कार्यालयों और अदालतों में हिन्दी को लेकर उपेक्षापूर्ण और दोगला रवैया है। ऐसे में सर्वोच्च न्यायालय का हालिया फैसला राजभाषा हिन्दी के हक में उम्मीद जगाता है। एक मामले की सुनवाई करते हुए अदालत ने विभागीय कार्यवाही और सजा का आदेश सिर्फ इसलिए निरस्त कर दिया कि कर्मचारी द्वारा मांगे जाने पर भी उसे हिन्दी में आरोप पत्र नहीं दिया गया था, जबकि कानूनन केन्द्रीय कर्मचारी हिन्दी या अंग्रेजी जिस भाषा में चाहे आदेश या पत्र की प्रति माँग सकता है। याचिकाकर्त्ता की माँग कहीं से भी नाजायज नहीं थी।

मुम्बई नौसेना में काम करने वाले मिथिलेश कुमार सिंह ने आठ साल पहले एक मामले में अपने खिलाफ विभाग की ओर से जारी आरोप पत्र हिन्दी में देने की माँग की थी लेकिन विभाग ने उसकी यह माँग खारिज कर दी। बाद में कैट और हाईकोर्ट ने भी नौसेना की यह दलील मान ली थी कि कर्मचारी अनपढ़ नहीं है। वह स्नातक है और उसने अपना फार्म अंग्रेजी में भरा था। लिहाजा, आरोप पत्र हिन्दी में न दिए जाने के आधार पर विभागीय जाँच रद्द नहीं की जा सकती। कैट और हाईकोर्ट में मिली हार के बाद भी मिथिलेश कुमार सिंह ने हार नहीं मानी और इंसाफ के लिए उसने देश की सबसे बड़ी अदालत सर्वोच्च न्यायालय में अपनी गुहार लगाई। जहाँ उसे जीत मिली। सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश एच.एल. दत्तू और न्यायाधीश जे. एस. खेहर की पीठ ने कर्मचारी के हक में फैसला देते हुए जहाँ 4 जनवरी, 2005 का नौसेना का वह आदेश निरस्त कर दिया, जिसमें उसने मिथिलेश कुमार सिंह के वेतनमान में कटौती का निर्णय लिया था। वहीं कैट और हाईकोर्ट का फैसला भी खारिज कर दिया।

अदालत ने अपने फैसले में केन्द्रीय कर्मचारियों के सर्विस रूल-1976 के नियमों का हवाला देते हुए कहा कि अगर केन्द्र सरकार किसी कर्मचारी की अर्जी, जवाब या ज्ञापन हिन्दी में प्राप्त करती है तो उसे उसका उत्तर हिन्दी में ही देना होगा। नियम सात कहता है कि अगर कोई कर्मचारी सेवा से सम्बन्धित किसी नोटिस या ऑर्डर की प्रति जिसमें विभागीय जांच की कार्यवाही भी शामिल है हिन्दी या अंग्रेजी जिस भाषा में मांगता है, उसे बिना देरी वह दी जायेगी। अदालत ने आगे कहा कि यह नियम इसलिए बनाया गया, ताकि किसी भी कर्मचारी को हिन्दी या अंग्रेजी में निपुण न होने का नुकसान न उठाना पड़े। फिर नेवल डाकयार्ड का 29 जनवरी,2002 का एक आदेश भी कहता है कि अगर कर्मचारी हिन्दी में अर्जी या जवाब देता है और हिन्दी में उस पर हस्ताक्षर करता है, तो उसका जवाब भी हिन्दी में ही दिया जायेगा। लेकिन इस मामले में मांगने पर भी वादी को हिन्दी में आरोप पत्र की प्रति नहीं दी गई। अदालत ने कहा कि कर्मचारी जिस भाषा में चाहे उसे दस्तावेज मुहैया कराना सरकार (नियोक्ता) की जिम्मेदारी है। आरोप पत्र हिन्दी में न देने से याचिकाकर्त्ता का मिले निष्पक्ष सुनवाई एवं नैसर्गिक न्याय के सिद्धान्त का उल्लंघन हुआ है जिससे वह अपना बचाव ठीक से नहीं कर पाया।

राजभाषा हिन्दी को लेकर यह उपेक्षापूर्ण और भेदभावपूर्ण रवैया कोई नई बात नहीं है, बल्कि आए दिन देश में ऐसे किस्से सामने आते रहते हैं, जिसमें हिन्दी के प्रति नौकरशाही की औपनिवेशिक मानसिकता साफ जाहिर होती है। अभी ज्यादा दिन नहीं बीते हैं, जब फरीदाबाद के एक कॉलेज में परीक्षा देने बैठे बीए मार्केटिंग के छात्रों को अंग्रेजी में पेपर थमा दिए गए। जबकि नियमानुसार सभी पेपरों को हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में होना चाहिए। जाहिर है, कॉलेज की इस हरकत पर हिन्दी मीडियम के छात्र स्तब्ध रह गए। जब इसको लेकर उन्होंने हंगामा किया, तब जाकर कॉलेज ने अनुवाद करने के लिए एक लेक्चरर की ड्यूटी लगाई। इस कड़वी सच्चाई पर शायद ही किसी को यकीन हो कि खुद सर्वोच्च न्यायालय की कार्यवाही में भी हिन्दी का प्रयोग संविधान के अनुच्छेद-348 के खण्ड (1) के उपखण्ड (क) के तहत प्रतिबंधित है। हालांकि इसी अनुच्छेद के खण्ड (2) के तहत देश के किसी भी राज्य में राज्यपाल उस राज्य के उच्च न्यायालय में हिन्दी या उस राज्य की राजभाषा का प्रयोग राष्ट्रपति की पूर्व सहमति के पश्चात्

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

www.thearyasamaj.org

कुछ स्फुट विचार

डॉ. गणेश बोरले

आपके माह अप्रैल के संपादकीय में आपने ऋग्वेद का मंत्र, उल्लेखित किया है वह आर्य समाज के सभी सदस्यों के लिये बहुत ही बोधप्रद है – जिसका भावार्थ – ईश्वर को भुलाकर यदि कोई संगठन शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के जोर पर कुछ करना चाहे तो – चाहे कितना प्रयास और घोर उद्योग करें पर उन्हें कभी सफलता नहीं मिलेगी ।

आपने भी इसी तारतम्य में अपने संपादकीय में निवेदन किया है कि – आर्य समाज में स्थानीय से लेकर सार्वदेशिक स्तर तक एकता लाना आवश्यक है और इस पर प्रत्येक कार्यकर्ता को विचार करना होगा । यह तभी संभव है जब हम तुच्छ स्वार्थ को त्याग कर, त्याग की भावना से समाज को ऊपर उठाने के कार्य तन, मन, धन से करें ।

आदरणीय, आप वास्तव में धन्यवाद के पात्र है आपने अपने प्रथम संपादकीय में आज की ज्वलंत समस्या नारी के प्रति रोजाना हो रहे दुष्कर्म और भारत की विचारधारा "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" की पूर्णतः अवहेलना पर सुंदर लेख और विचार दिये है वे वास्तव में बोधप्रद हैं और निश्चित ही पढ़ने वाले को उद्वेलित करेंगे ।

मैं स्त्री रोग विशेषज्ञ और महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थ प्रकाश में जो मार्गदर्शन किया है उसको जानने वाला होने से कह सकता हूँ कि प्रति बन्धित है इस समस्या का निराकरण महर्षि द्वारा दर्शाए मार्ग पर चलने से ही संभव है ।

हमारे शास्त्र और आधुनिक विज्ञान यह मानते हैं कि

शेष भाग अगले पृष्ठ पर ....

प्राधिकृत कर सकता है । लेकिन इस स्वतंत्रता का लाभ अभी तक कुछ राज्यों को ही मिल पाया है । राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार के उच्च न्यायालयों में ही राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को वैधानिक स्वीकृत मिली हुई है । इन राज्यों के अलावा साल 2002 में छत्तीसगढ़ सरकार ने उच्च न्यायालय में हिन्दी के प्रयोग की माँग की और साल 2010 एवं 2012 में तमिलनाडु व गुजरात सरकार ने अपने राज्य में क्रमशः तमिल एवं गुजराती के प्रयोग की माँग की । तीनों ही मामलों में केन्द्र सरकार ने राज्य सरकारों की माँग की ठुकरा दी । राजभाषा हिन्दी और दीगर भारतीय भाषाओं में अदालत में कामकाज की यह माँग कहीं से भी नाजायज नहीं थी । तमिल एवं गुजराती इन राज्यों की मातृभाषा है और अपनी भाषा में कामकाज की उनकी यह माँग संवैधानिक दायरे में है ।

सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का पैगाम साफ है कि किसी व्यक्ति को अपनी भाषा में मांगी गई जानकारी देने से मना करने का कोई आधार नहीं बनता । देश में बड़े पैमाने पर जनसाधारण को महज अंग्रेजी नहीं समझ पाने के चलते कई जगह भारी नुकसान उठाना पड़ता है । सरकारी दफ्तरों से लेकर ऊँची अदालतों का कामकाज भी अंग्रेजी में ही चलता है । वकीलों को कागजात अंग्रेजी में तैयार करने पड़ते हैं और फैसले भी अंग्रेजी में ही आते हैं, जबकि न्यायिक प्रक्रिया से फरियादी और आरोपी भी जुड़े होते हैं । जिनमें ज्यादातर लोग अंग्रेजी नहीं जानते । अंग्रेजी न जानने की वजह से उन्हें खूब परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं ।

जब भी यह मुद्दा उठाता है तो सरकार की दलील होती है कि अंग्रेजी में फैसला लिखना न्यायाधीश के लिए व्यावहारिक विवशता है । जाहिर है, यही दलील फरियादी और आरोपी की भी हो सकती है कि फैसला उनकी भाषा में न होने की वजह से वे उसे समझे कैसे? यानी भाषा को लेकर जो व्यावहारिक विवशता न्यायाधीश के सामने आती है, वही समस्या जनसाधारण की भी है । फिर मांगने पर उसका हिन्दी या सम्बन्धित प्रांत की भाषा में अनूदित रूप मुहैया कराने की जिम्मेदारी भी सम्बन्धित महकमे की होनी चाहिए । सर्वोच्च न्यायालय ने अपने हालिया फैसले में इसी बात की महर लगाई है ।

अदालत ने हमारे हुक्मरानों और नौकरशाही को एक जरूरी पैगाम दिया है कि वह राजभाषा हिन्दी को लेकर अपना पक्षपातपूर्ण नजरिया बदलें । राजभाषा हिन्दी के हक में अच्छी बात यह होगी कि सरकार अब खुद आगे आकर इस फैसले को नीतिगत रूप देने की पहल करे ।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

- दैनिक जागरण से साभार

www.thearyasamaj.org

ईश्वर ने नर और नारी के बीच सहज एवं प्राकृतिक आकर्षण शाश्वत रूप से बनाया है । इसे ही हम कामवासना कहते हैं । नर और नारी के सामने आने पर उनमें विभिन्न ग्रंथियों के रस के स्त्राव से उत्तेजना जाग्रत होती है । कामोत्तेजना नर और नारी के लिये बहुत घातक बन जाती है । यह उत्तेजना नारी के रूप को देखने से, स्पर्श करने से, सुगंध से, सुनने से, नारी के अंगो के उभारो के प्रदर्शन से, सौंदर्य प्रदर्शन उसके परिधान और सबसे बड़ी चीज एकांत में मिलन, हावभाव, हास्य परिहास, रहन सहन, टी.वी. के रियालिटी शो, विज्ञापन मं नारी का फूहड़ प्रदर्शन, आज की फूहड़ फिल्में, ब्लू फिल्म, डी.जे. के उत्तेजक गाने, मोबाइल में दिखाये जा रहे वीडियो, सहशिक्षा आदि अनेक कारण हैं जो पुरूष को दिन रात उत्तेजक बना रहे हैं और यही कारण है कि उसे अबोध बालिकायें भी अपनी शिकार नजर आने लगती हैं और यही उत्तेजना पुरूष को दानव बनने पर मजबूर कर देती है और उस वक्त वह पूर्णतः अंधा होकर कुछ भी कर बैठता है । इसके लिये आजकल कठोर दंड देने की बात सब ओर से उठ रही है परंतु इससे मात्र यह दुष्कर्म बंद नहीं होंगे । इसको काबू करने का मार्ग महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में बताया है और वह शुरू होता है गर्भाधान के पूर्व से, जिसे मैं संक्षेप में नीचे लिख रहा हूँ –

(1) आज की नारी जो माता भी है अपने कर्तव्य भूल चुकी है जबकि सत्यार्थ प्रकाश कहता है कि संतान को ज्ञानवान और चरित्रवान बनाने वाली प्रथम गुरू माता ही है वह मनुष्य रूपी लोथडे को जन्म देकर उसे अपना दूध पिलाकर याने रक्त से सींचकर मनुष्य रूप प्रदान करती है । आज की माता उसे बड़ा तो करती है परंतु खुद ज्ञानवान न होने से ज्ञानवान और चरित्रवान नहीं बना पा रही है । इसीलिए महर्षि जी कहते हैं कि जिस संतान के माता–पिता धार्मिक विद्वान हैं वह संतान भाग्यवान है । इसमें भी माता परम गुरू है। वह माता ही है जो अपनी संतान को सर्वश्रेष्ठ देखना चाहती है अतः उसका ज्ञानवान होना अति आवश्यक है । आधुनिक विज्ञान और हमारे सभी शास्त्र कहते हैं कि गर्भस्थ बालक पर माता की प्रत्येक चेष्टा और क्रिया और विचारों का प्रभाव पड़ता है । अतः प्रत्येक नारी को और पुरूष को "सत्यार्थ प्रकाश" का गहन अध्ययन जरूरी है जिसमें शिक्षा, ब्रह्मचर्य, विवाह गर्भाधान आदि 16 संस्कारों की जानकारी दी गई है। महर्षि जी कहते हैं कि माता को उचित है कि बालक के गर्भ में आने से पूर्व, मध्य और प्रसव पश्चात – मादक द्रव्य, अभक्षणीय पदार्थ छोड़कर – शांति, आरोग्य बल, बुद्धि, पराक्रम को बढ़ाने वाले उत्तम पदार्थों का सेवन करे और सुबह सूर्योदय से पूर्व उठकर नियमित रूप से संध्या, हवन और पंच महायज्ञ करे, स्वाध्याय करे जिससे रज और वीर्य दोषों से रहित होकर उत्तम गुणयुक्त संतान पैदा हो । वह इसका विशेष ध्यान रखे कि जैसा खाये अन्न वैसी संतान बनती है । माता ऐसा प्रयत्न करे कि संतान जितेंद्रिय, विद्याप्रिय और सत्संग में रूचि रखने वाली बने । बालकों में सत्य – भाषण, शौर्य, धैर्य एवं प्रसन्नता आदि गुणों का विकास हो । ब्रह्मचर्य और वीर्यरक्षा – माता पिता बच्चों को यह अवश्य समझावें की वीर्य की रक्षा में आनन्द और नाश करने में दुःख है । वीर्य रक्षण हेतु संतान को विषयों की कथा, विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का दर्शन माता या बहन के रूप के विपरीत, एकांत सेवन, स्त्री से सम्भाषण, स्त्री स्पर्श आदि से पृथक रहकर ही उत्तम गुरूकुल पद्धति की शिक्षा ग्रहण कर ज्ञानवान बनें । विशेष –महर्षि जी ने कहा है कि पिता व भाई भी कन्या के साथ एकांत में ना रहें । अगर यह संभव हो गया तो वह उत्तम चरित्रवान नागरिक बनेगा और कभी दानवीय कर्म नहीं करेगा, ना किसी को करने देगा । माता का अर्थ ही निर्माता है । वही संतान का चरित्र निर्माण करती है । उसका ज्ञानवान होना आवश्यक है । अतः समाज और शासन को ऐसी व्यवस्था करना चाहिऐ कि कन्या की शिक्षा अनिवार्य हो। यह सभी जानते हैं कि उत्तम, ज्ञानी कन्या दो कुलों का उद्धार करती है ।

पिता – 5 वर्ष की उम्र तक माता की गोद में रहने के बाद संतान पिता की उंगली पकड़कर जीवन पथ पर आगे बढ़कर शिष्टाचार सीखता है । पिता ज्ञानवान, चरित्रवान, सत्संगी होगा तो संतान भी इन्हीं गुणों से युक्त होकर जीवनपथ पर आगे बढ़ेगा और आठ वर्ष की उम्र में आचार्य कुल में प्रवेश करेगा ।

आचार्य – शिक्षा के साथ सदाचार की शिक्षा देने वाले को आचार्य कहते हैं । आचार्य अगर ज्ञानी, ध्यानी, चरित्रवान, दानी व सन्मति वाला है तो शिष्य निश्चित रूप से सद्गुणी बनेगा, माता, पिता और आचार्य लाड़न के साथ ताड़न अवश्य करें

www.thearyasamaj.org

क्या तीर्थ यात्रा का कोई महत्व है आज....?

अजय टंकारावाला

इस शंका का समाधान करने का प्रयत्न किया है इसलिए पत्र के रूप में यह विचार हर उस पुत्री के लिए है जो धर्म में थोड़ी भी रूचि रखती हो ताकि उसे सत्यज्ञान हो सके ।

मेरा इस पत्र का विषय है तीर्थ स्थान और तीर्थ यात्रा । तीर्थ यात्रा के लिए लोग घर से चलते थे ग्रुप बना कर और अच्छी धार्मिक सोसाइटी को साथ लेकर, धर्म में प्यार रखने वाले लोगों को साथ लेकर । रास्ते में धार्मिक विषयों पर बात होती थी । भजन गाते जाते थे । एक दूसरे के विचारों का आदान-प्रदान होता था । यातायात के साधन न थे । कुछ लोग जिनकी आर्थिक व्यवस्था अच्छी नहीं थी वे पैदल जाते थे । कुछ लोग बैलगाड़ियों पर और कुछ रेलगाड़ी पर । एक दूसरे से बहुत कुछ सीखते थे । एक-दूसरे को बहुत कुछ सिखाते थे । ऐसी तीर्थयात्रा का बहुत लाभ होता था । परन्तु आज कल लोग टैक्सियों में जाते हैं । कार में तेज रिकार्ड लगा होता है, अश्लील संगीत चलता रहता है । परिवार के अपने ही सदस्य होते हैं, कभी धर्म चर्चा होती ही नहीं । धार्मिक विचारों का आदान-प्रदान तो दूर की बात है । यदि रास्ते में किसी स्थान पर बैठेंगे तो शराब निकाल कर पी लेंगे । नहीं तो कम से कम सिग्रेट तो जरूर ही । कुछ लाभ नहीं ऐसी तीर्थ यात्रा का । इससे तो घर पर बैठना अधिक लाभदायक है ।

तीर्थ स्थान पर कोई लाभ है या नहीं? था, परन्तु अब नहीं । हाँ लाभ हो सकता है । पहले चूंकि यातायात के साधन उपलब्ध न थे इसलिए घर से निकल पड़ते थे कि इस बहाने धर्म की चर्चा भी सुनेंगे और अपने देश को भी देखेंगे । वास्तव में यह भारतदर्शन था ताकि एक-दूसरे को मिलें । उत्तर वालों को पता लगे कि दक्षिण वाले लोग कैसे हैं, कैसा पहरावा हैं, कैसा खानपान है? और दक्षिण वालों को उत्तरवालों की जानकारी मिले । एक-दूसरे को मिलकर, जानकर समझ कर हम सब एकता में पिरोये जा सकते हैं । यह था उद्देश्य । किन्तु आजकल तो विज्ञान ने इतनी उन्नति की है कि मनुष्य प्रातः देहली में होता है तो सायं विलायत में । दो घण्टे काम किया और फिर वापिस । इस भाग दौड़ में क्या समझेंगे उन लोगों के बारे में । जिन्दगी तीव्र गति से चल रही है । किसी के पास समय ही नहीं । तीर्थ स्थानों पर गए न गए एक जैसा है । लोग तीर्थ मन्दिरों में जाते हैं मूर्ति के आगे माथा झुकाया और वापिस आ गए और मन में यह झूठी खुशी कि शायद इस स्थान पर आकर बहुत पुण्य कमा कर चले हैं । वास्तविक रूप से उद्देश्य था कि पहाड़ देखे जायं, वहां पर जाकर रहा जाए । वह मुनि और संन्यासी जो कन्दराओं और गुफाओं में रहते हैं, उनसे मिला जाये, उनसे धर्मशिक्षा प्राप्त की जाए । उनसे जीने का ढंग सीखा जाए । वह विद्वान् जो किसी दूसरे शहर, नगर, पहाड़ या तीर्थ स्थान पर रहते हैं उनको सुनकर जीवन को सफल बनाया जाए । जब तक इस बात को सम्मुख रखकर तीर्थ स्थान को नहीं जाया जाता तब तक कोई लाभ नहीं ऐसे स्थान पर जाने का । यदि इस उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है तो तीर्थ स्थान पर जाना सार्थक हो सकता है ।

अब रही बात तीर्थ स्थान की । सुनो, जल से तो शरीर शुद्ध होता है, सत्याचरण से मन पवित्र होता है, तप करने से जीवात्मा और ज्ञान से बुद्धि पवित्र होती है । किसी स्थान से मन, बुद्धि या आत्मा

शेष भाग अगले पृष्ठ पर ....

क्योंकि सिर्फ लाड़न से शिष्य बरबाद होते हैं और ताड़न से अमृत पिलाने जैसा कार्य होता है । शिष्य गुणयुक्त बनते हैं ।

महर्षि गुरूकुल के बाबत् बताते हैं कि बालक बालिकाओं की सहशिक्षा नहीं होनी चाहिये, लड़के-लड़कियों के गुरूकुल अलग होने चाहिये और उनमें कम से कम 2 कोस का अंतर होना चाहिये ।

कन्या गुरूकुल में 5 वर्ष से ऊपर उम्र का बालक भी प्रवेश न करपावे । और पुरूष गुरूकुल में किसी भी उम्र की कन्या प्रवेश न करें । आज की शिक्षा दीक्षा शास्त्रों के विपरीत है अतः शासन को चाहिये कि शिक्षा नीति में आमूल चूल परिवर्तन हो और वैदिक विद्वानों की सलाह पर ही शिक्षाकार्य हों ।

नि:शुल्क चिकित्सालय
बरारीपुरा, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
फोन : ०७१६२-२४३२१६

www.thearyasamaj.org

जीवन को सार्थक बनाना है कैसे ?

अशोक यादव

ईश्वर ने जीवों के कल्याणार्थ जगत बनाया जीव भी सदैव सुख चाहता है तो दो प्रकार के सुखो को प्राप्त कराने के लिए मानव जाति जगत में उत्पन्न होकर इस सांसारिक सुख दुःख में फंस कर अपने सद्कर्म रूपी यज्ञ से दूर हो जाने से जीवन का जो लक्ष परम् आनंद प्राप्त करने के बजाय वह संक्रिय सुख के साधनों को ही अपना जीवन का लक्ष समझ कर जीव जन्तु की तरह जी रहा है ।

जीवात्मा को पावन करने का सामर्थ्य रखने वाली परमात्मा की वाणी वेदरूपी ज्ञान विज्ञान से वंचित जीव मानव शरीर में रहते कर्म करने में स्वतंत्र जीवात्मा फल रूपी सुख-दुख पाने में परतंत्र ईश्वराधीन है वह यह भूलता नहीं उसने अपने आपको मक्कड़ जाल में फँसने का पाखण्ड रूपी प्रबंध कर लिया है ।

वह जीवात्मा जो मानव जीवन को प्राप्त होने पर ज्ञानार्जन कर के ईश्वरोपासना कर सद्कर्म रूपी महायज्ञ कर के परमानन्द की प्राप्ति के लिए पवित्रता-शुद्धता-बुद्धता-करूणा वैराग्य तथा आनंद को प्राप्त करते जीवों को त्रितापादी दुःखों से छुड़ाने के लिए यत्नशील रहकर ईश्वर कृपा से लाभान्वित होने का वह यत्किंचीत प्रयत्न नहीं करता यह उस की मुर्खता है या अज्ञानता ?

जगत में कोई मानव अज्ञानी नहीं है पर वह अज्ञान से, अविद्या से छूटना नहीं चाहता । यह अविद्या अज्ञान से ही वह इंद्रिय सुखों के साधनों से जकड़ा है आसक्त है ।

मानव विद्या से, ज्ञान से, सद्कर्मों से बहुत सुखों के साधन प्राप्त कर सकते हैं । परन्तु उसे धर्म-तप-साधना को धारण कर के यज्ञरूपी सद्कर्म करना पड़ता ।

यज्ञ-देवपूजा, संगतीकरण, दान है । कर्म सुखों का साधन, धर्म, सुखों का आधार है । लेकिन वह धन जोड़ने में लगा है । इस धन की तीन गति होती जो पहला भोग है । दूसरा दान है । तीसरा नाश हैं । धन प्राप्ति का तथा धन व्यय करने दोनों का आधार साधन धर्म है । धर्म का मूलाधार वेद है वेदों का आधार सत्य है तथा सत्य का आधार वह ईश्वर हैं । ईश्वर चराचर जगत का, ब्रह्माण्ड का आधार है । वह पवित्र शुद्ध बुद्ध करूणा आनंद स्वरूप है समग्र ऐश्वर्य का स्वामी है स्वयंभू है ।

उस परम् पावन परम् पिता परमात्मा की कृपा लिए ईवश्रो पासना, वेदज्ञान का स्वाध्याय, तथा सद्कर्म रूपी यज्ञ का अधिकारी मानवों को होना है ।

स्थूल शरीर का भोजन अन्न, शाक-सब्जी, दाल चावल हैं । मन बुद्धि का भोजन ज्ञान है । तथा आत्मा का भोजन परमानन्द है ।

मानव शरीर धारी जीवात्मा परमानन्द का विचार नहीं करता उसे परमानन्द मानव शरीर के बिना नहीं मिलता मानवों ने घरदार,

शेष भाग अगले पृष्ठ पर ....

पवित्र नहीं हो सकती । जैसे मान लो सन्ध्या उपासना यदि करनी है तो आवश्यक है कि स्नानादि करके बैठें । इसलिए स्नान की अति आवश्यकता है परन्तु यह नहीं कि स्नान कर लिया तो मानो कोई पुण्य कर लिया-**मन तो मलिन वैसा ही मूर्ख रहा, गंगा में रोज जा के नहाया तो क्या हुआ ।**

पुराने युग में जब लोग बाहर जाया करते थे तो किसी नदी के तट पर बैठ कर पहले स्नान करते थे, फिर उसी एकान्त स्थान पर बैठ कर प्रभु का भजन करते थे या किसी झरने पर स्नान करते थे और फिर प्रकृति की गोद में बैठकर प्रभु का ध्यान करते थे । ऐसे स्थान धीरे-धीरे तीर्थ स्थान कहलाने लग गए । परन्तु आजकल लोग ऐसे स्थानों पर जाते हैं, स्नान करते हैं, और वापिस आ जाते हैं कि हमने तीर्थ स्नान कर लिया, मानो कोई धार्मिक मोर्चा मार लिया ।

सो बेटी, वास्तविकता को पहचानो । ईश्वर का स्मरण करो । चाहे घर पर बैठे कर चाहे मन्दिर में बैठ कर । पहाड़ की गुफा में बैठकर या नदी के तट पर बैठ कर । परन्तु ध्येय यही होना चाहिए कि हमने ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और पूजा करनी है । इतना ध्येय काफी नहीं कि हमने केवल उसी स्थान पर पहुंचना है या उस स्थान पर जा कर स्नान करके लौट आना है । हमने तो वहां जाकर ज्ञान के अनमोल मोती ढूंढ़ कर सब में बांटने हैं ।

(डॉ.आनन्द अभिलाषी जी की पुस्तक से प्रेरित)
टंकारा समाचार से साभार

www.thearyasamaj.org

कैसी हो हमारी रात्रिचर्या?

आचार्य बालकृष्ण

दिन और रात को मिलाकर 24 घण्टों की पूरी अवधि को ही दिन कहा जाता है। अतः रात्रिचर्या भी दिनचर्या का ही अंग होता है। दिन भर के सभी काम और परिश्रम करने के बाद रात्रि में विश्राम की आवश्यकता का अनुभव होता है। चूंकि नींद या सोने की क्रिया ही रात में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, अतः रात्रिचर्या में सबसे पहले नींद के विषय में ही जानकारी प्रस्तुत करते हैं।

नींद या निद्रा: सभी जानते हैं कि शरीर को स्वस्थ और ताज़ा बनाए रखने में ठीक प्रकार नींद लेना बहुत आवश्यक है। सारे दिन के कार्यों को करने के बाद जब शरीर और मस्तिष्क थक कर निष्क्रिय से हो जाते हैं तथा ज्ञानेन्द्रियाँ एवं कर्मेन्द्रियां भी थक जाती हैं तो व्यक्ति नींद की अवस्था में आ जाता है। इस प्रकार वह स्थिति जब मन का सम्पर्क ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों से टूट जाता है तथा वे एकदम निष्क्रिय-सी हो जाती हैं, नींद या निद्रा कहलाती है। नींद की स्थिति में शरीर में सांस लेना, छोड़ना, रक्त-संचार आदि बहुत महत्वपूर्ण कार्य ही चलते रहते हैं शेष कार्य रुक जाते हैं। इससे शरीर की बहुत कम ऊर्जा ही खर्च होती है, शेष बची ऊर्जा ही (शक्ति) बल आदि को बढ़ाती है। यही कारण है कि सोने के बाद व्यक्ति अपने को स्वस्थ, और उत्साहित अनुभव करता है। रात का समय नींद के अनुकूल है क्योंकि रात में शरीर का कफ दोष और मन में तमस दोष नींद लाने में सहायक होते हैं। रात्रि में अन्धकार, शोर की कमी तथा दिन की अपेक्षा ठण्डक अधिक होने से ये दोनों दोष बढ़ जाते हैं अतः अच्छी नींद आने में सहायता मिलती है। रात को सोने से पहले टी.वी. बन्द करके, फोन व मोबाइल को बिस्तर से दूर रखकर ही सोना चाहिए, यथासम्भव सबको अलग-अलग बिस्तर पर सोना चाहिए जो स्वस्थ रहने के लिए परम आवश्यक है। रात्रि को जल्दी सोना सुबह जल्दी उठना चाहिए (क्योंकि रात्रि के समय वात प्रभाव होता है तब निद्रा अच्छी आती है

शेष भाग अगले पृष्ठ पर ....

उद्योग धंदा, पति पत्नी, बाल बालिका, खेती बाड़ी व्यापार करना ही अपना जीवन का लक्ष समझा हैं। वास्तविक यह जगत में उत्पन्न जीवों के स्थूल शरीर के संक्रिय जन्य सुखों के साधन हैं। इस साधनों को ही साध्य समझा तथा मन बुद्धि चिन्त में पड़े काम, क्रोध, ईर्षा, द्वोष, लोभ, लालच, मोह, दम्भ, अहंकार से उत्पन्न हुए विवाद झगड़ों बखोड़ों को ही अपना जीवन समझ रहा है।

सुखों के पीछे दौड़ने वाले जीवों के पीछे दुख दौड़ रहा है। यह सुख हाथ नहीं लग रहा तथा दुखों के पंजो में फंस रहा है। इस सुख दुख रूपी संसार को जीवन समझ रहा वास्तविक जीवन क्या है यह वह नहीं समझ रहा है।

क्या पशु पक्षि जी नहीं रहे हैं? उन में और मानवों में क्या भेद हैं? मानव का शरीर पंच कोषों का हैं। उस के पास विवेक है, विचार है, सद्कर्म है, ईश्वरोपासना है वेदाध्ययन है, योगाभ्यास है, यज्ञकर्म है, यह सब उस पुरूषार्थी परमार्थी मानवों के पास रहते हुए वह मूल साधनों से भटक रहा है।

मनुष्यों ने सोचना है कि यह मानव चोला साध्य है या साधन हैं? ज्ञान कर्म उपासना यह सूक्ष्म देह याने मन बुद्धि चिन्त अन्तःकरण के साधन हैं। जीवात्मा साधक है शरीर तथा शरीर द्वारा किया जाने वाला कर्म भी साधन है साध्य तो परम पिता परमात्मा का स्वरूप सच्चिदानन्द ही हैं।

मानव जन्म का मुख्य उद्येश्य ही परमानन्द की प्राप्ति है। ईश्वर तो सर्वत्र विद्यमान होने से वह जीवों में भी विद्यमान है वह प्राप्त है। ईश्वर जीवों में विद्यमान होते हुए भी, जीवों को आनंद की प्राप्ति नहीं हो रही। उस का मूल कारण अज्ञान-अविद्या-अपवित्रता, अशुद्धता, अबुद्धता, अकरूणा, आसक्ति तथा शोक है इस से छूटना मुक्ति है।

इसलिए शिक्षा-संस्कार-सुविद्या-ज्ञान, उपासना, योगाभ्यास, वेदाध्ययन, यज्ञ कर्म सत्संग, सेवा, परोपकार, पुरूषार्थ, परमार्थ, सद्कर्म आदि माध्यम हैं। इनसे जीवन सार्थक हो सकता है।

महामत्री आर्य समाज हंसापुरी नागपुर

www.thearyasamaj.org

प्रातः शीघ्र उठाने से वात तथा कफ की प्रधानता होती है उस समय पर मल विसर्जन की क्रिया भी ठीक से होती है । अतः प्रातः शीघ्र उठना चाहिए । उससे मन भी प्रसन्न रहता है । शरीर में स्फूर्ति, ताजगी एवं आनन्द की वृद्धि होती है । प्रातः उठकर भ्रमण करने से शुद्ध वात एवं शान्त वातावरण देह के निरोगता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है ।

१. स्वप्न-अवस्था: इसमें व्यक्ति निद्रावस्था में सपने देखता रहता है । अवचेतन मन संकल्प-विकल्पों से घिरा रहता है । इस प्रकार यह नींद गहरी और पूरी तरह विश्राम देने वाली नहीं होती ।

२. सुषुप्त-अवस्था: इसमें मन और इन्द्रियाँ दोनों निष्क्रिय होते हैं । सुषुप्त-अवस्था की कम समय की नींद भी मनुष्य के शरीर और मन को स्वस्थ एवं ताज़ा बना देती है जबकि स्वप्न-अवस्था की अधिक नींद भी थकावट दूर नहीं करती । अच्छी नींद लाने के लिए शारीरिक श्रम और थकावट के साथ-साथ मानसिक रूप से पूरी तरह शान्त होना (अर्थात् क्रोध, भय, शोक, चिन्ता आदि मानसिक विकारों से रहित) भी आवश्यक है । जिन व्यक्तियों को नींद नहीं आती वे 'अनिन्द्र' रोग से ग्रस्त माने जाते हैं तथा अनेक प्रकार के मानसिक शारीरिक विकारों से पीड़ित रहते हैं ।

अनिद्रा के कारण और उपाय:

- मानसिक विकार, जैसे - भय, चिन्ता, शोक और क्रोध,
- अत्यधिक शारीरिक परिश्रम से पूरे शरीर में पीड़ा व थकावट आदि ।
- रक्त-मोक्षण अर्थात् शरीर से रक्त निकलवाने की क्रिया,
- अति उपवास,
- धूम्रपान,
- असुविधाजनक बिस्तर व स्थान,
- सत्व गुण की अधिकता और तमोगुण की कमी, वृद्धावस्था तथा कुछ रोग विशेषकर वात दोष से उत्पन्न शूल, पीड़ा आदि रोग ।
- वमन (उल्टी) और विरेचन (दस्त) की क्रियाओं द्वारा सिर एवं शरीर में से दोषों का अधिक मात्रा में निकलना स्वाभाविक रूप से ही कम नींद आना ।

अनिद्रा को दूर करने के उपाय:

- मालिश उबटन और स्नान व हाथ-पैर आदि अंगों को दबाना,
- स्निग्ध पदार्थों, दही के साथ शालि चावल, मादक द्रव्यों एवं
- दूध को सेवन,
- मानसिक रूप से प्रसन्न रहना,
- रूचि के अनुसार संगीत सुनना,
- आँखों, सिर और मुख के लिए आरामदायक मलहमों का प्रयोग करना,
- सोने के लिए आरामदायक बिस्तर और शान्त स्थान
- प्राकृतिक इत्र (Perfume) एवं अन्य सुगन्धियों को सूंघना व कमरे में सुन्दर पुष्पगुच्छ आदि रखना ।

दिन के समय सोने की मनाही: दिन में सोने से शरीर में कफ और पित्त दोष बढ़ जाते हैं जिसमें रोग उत्पन्न हो सकते हैं अतः दिन के समय सोना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है । दिन के समय सोने से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो सकते हैं, जैसे- हलीमक (खतरनाक प्रकार का पीलिया), सिर दर्द, शरीर का भारीपन, शरीर में दर्द, पाचन-शक्ति की कमजोरी, हृदयोपलेप (ऐसा महसूस होना जैसे हृदय पर बलगम जमी हो), सूजन, भोजन में अरूचि, उल्टी अथवा उल्टी की इच्छा, नाक में सूजन (नासाशोथ), आधे सिर में दर्द, शीत पित्त या छपाकी, विस्फोट या छाले होना, फोड़े-फुंसियां, खुजली, तन्द्रा, (सुस्ती), खाँसी, गले के रोग, बुद्धि और स्मरण शक्ति की कमी, शरीर के रसवह, रक्तवह आदि स्त्रोतों में रूकावट, ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों में कमजोरी, कृत्रिम विषों का अधिक विषैला प्रभाव व इस प्रकार के अन्य रोग । अतः मोटे शरीर वाले, अधिक स्निग्ध पदार्थ का सेवन करने वाले, कफ-प्रकृति वाले कफज रोगों से पीड़ित, जोड़ों के दर्द से ग्रस्त तथा कृत्रिम विष के शिकार लोगों को दिन में बिल्कुल नहीं सोना चाहिए ।

अपवाद: ग्रीष्म-ऋतु में रात्रि की अवधि कम हो जाती है तथा शरीर में जलीय तत्वों का अधिक शोषण होने से वात बढ़ जाती है । अतः इस ऋतु में सभी मनुष्यों के लिए दिन में सोने की अनुमति है । इसके अतिरिक्त कुछ अन्य स्थितियों में भी दिन के समय सोने की मनाही नहीं है, संगीत, गायन, अध्ययन व मादक द्रव्यों के सेवन तथा अधिक चलने से थकान होने पर, क्षय, थकावट, प्यास, दस्त, शूल, दमा, हिचकी जैसे

www.thearyasamaj.org

रोगों से पीड़ित होने पर, वृद्धावस्था और बाल्यावस्था में क्षीण देह होने पर, गिरने अथवा आक्रमण आदि से घायल होने पर किसी वाहन पर यात्रा करने, रात्रि जागरण, क्रोध, शोक एवं भय से थके होने पर दिन में सोने पर भी धातुएँ एवं शक्ति सन्तुलित स्थिति में रहते हैं। कुपित कफ दोष भी शरीर के अंगों का पोषण करता है तथा दीर्घायु होती है।

रात के समय दही का सेवन क्यों न करें?

सामान्यतः स्वास्थ्य के लिए हितकारी होते हुए भी दही अभिष्यन्दी (शरीर के स्त्रोत्सों में रूकावट करने वाला) होता है इसी गुण के कारण आयुर्वेद में रात के समय दही खाने की मनाही है (क्योंकि रात के भोजन करने के कुछ समय बाद ही सोना पड़ता है। भोजन-पाचन की प्रक्रिया सोते-सोते चलती रहती है, जो बहुत धीमी होती है। ऐसी स्थिति में स्त्रोत्सों में रूकावट की सम्भावना अधिक रहती है। परिणामस्वरूप नींद तथा चयापचय की क्रिया में भी बाधा उत्पन्न होती है। यही कारण है कि रात्रि के समय सामान्य मनुष्य के लिए भी दही सेवन की मनाही है श्वास (दमा), खाँसी, जुकाम, जोड़ो के दर्द से पीड़ित रोगियों के लिए तो रात के साथ दिन में भी दही खाने का निषेध किया गया है क्योंकि इस प्रकार के रोग तो स्त्रोत्सों में रूकावट होने के कारण ही पैदा होते हैं।

रात्रि के समय पढ़ना: आँखों को स्वस्थ बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि पढ़ते-लिखते समय प्रकाश की व्यवस्था उचित रूप से व पर्याप्त हो परन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि सूर्य का प्रकाश जितना अनुकूल है, कृत्रिम प्रकाश उतना अनुकूल नहीं है। इससे नेत्रों की दृष्टि धीरे-धीरे कम होती जाती है। इसलिए जहाँ तक सम्भव हो, रात के समय कम पढ़ना चाहिए। लिखने से आँखों पर अधिक जोर पड़ता है, अतः रात्रि में लेखन कार्य न करें तो अच्छा है।

मैथुन क्रिया: आयुर्वेद ने स्वास्थ्य एवं सामाजिक नियमों को देखते हुए मैथुन क्रिया के लिए भी कुछ सीमायें एवं मर्यादाएं निर्धारित की हैं। इन नियमों के पालन से स्त्री और पुरूष दोनों को यौन जनित रोग नहीं होते। जनन इन्द्रिय के अलावा किसी अन्य कृत्रिम इन्द्रिय के साथ यौन क्रिया करना निषिद्ध है। सम्भोग से पहले या बाद में एक गिलास दूध चीनी या शहद मिलाकर पीना लाभदायक होता है।

योग संदेश से साभार

.....***.....

- सूचना एवं निवेदन -

जनवरी 13 से 'आर्य सेवक' ने अपनी सेवाएं देना प्रारंभ कर दिया है। जुलाई से रंगीन छप रहा है। सभा की आर्थिक स्थिति सक्षम नहीं होने के बावजूद समय की आवश्यकता की मांग को ध्यान में रख कर यह छापा जा रहा है, यह निर्णय किया गया कि अगस्त 13 से इसका शुल्क लेना प्रारंभ किया जाए। आर्य समाजों से रू. 200 तथा व्यक्तिगत रू. 150 वार्षिक लिया जाएगा। अंक तो आपको भेजना जारी रहेगा इस आशा से कि राशि तो प्राप्त हो जाएगी। आपके सहयोग के लिए निवेदन है।

जयसिंह गायकवाड़	*अनिल शर्मा*	*यशपाल जानवानी*	*सत्यवीर शास्त्री*
सम्पादक 'आर्य सेवक'	मंत्री	कोषाध्यक्ष	प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. तथा विदर्भ, नागपुर

www.thearyasamaj.org

ओ३म् परमात्मा का सर्वोत्तम अभिधाम

डॉ. धर्मवीर सेठी

अ, उ और म्-दो स्वर और एक व्यंजन - के योग से बना अद्भुत शब्द 'ओ३म्' सृष्टि, स्थिति और प्रलय का द्योतन करने वाले न जाने कितने ही दार्शनिक भाव अपने अन्तस् में समेटे हुए है । कहीं-कहीं इस शब्द को 'ओम्', ओं, ... ऊँ इन रूपों में भी लिखा हुआ आप देखते होगें । परन्तु वेदानुकूल इस की शुद्ध वर्तनी 'ओ३म्' है जिसमें 'प्लुत' स्वर का प्रयोग किया गया है । उच्चारण करते समय अपने फेफड़ों में पूरी सांस भर कर फिर सांस छोड़ते हुए इस शब्द का होंठ स्वतः धीरे-धीरे बन्द होने से उच्चारण होता है । पंजाबी भाषा की गुरूमुखी लिपि में इसे ओंकार लिखा जाता है ।

अपनी प्राचीनतम सनातन वैदिक मान्यताओं को अक्षरशः मानने और डंके की चोट से मनवाने वाले आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जब अपने प्रथम दार्शनिक ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की तो मानों आरम्भ में उस परम पिता परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु ही उन्होंने सम्भवतः प्रथम समुल्लास (अध्याय) में ईश्वर के एक सौ नाम गिनवा कर यह बताने का प्रयास किया कि वैदिक साहित्य में इन शब्दों का प्रयोग, प्रकरणानुकूल, परमेश्वर के नाम के लिए ही किया गया है और कि परमेश्वर का कोई भी नाम अनर्थक नहीं है । जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण, कर्म स्वभाव हैं, अनेक अनुरूप वैसे ही उनके अनन्त नाम भी हैं ।

इस गम्भीर विषय को अधिक स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है कि उन सौ नामों का उल्लेख यहाँ अवश्य किया जाए जो अधोलिखित हैं:

ओ३म् (ओं, ओम्), हिरण्यगर्भ, खम, वायु, ब्रह्म, तैजस, अग्नि, ईश्वर, मनु, प्रजापति, आदित्य, अज, इन्द्र, प्राज्ञ, नारायण, सत्, प्राण, मित्र, चन्द्र, चित् (ज्ञान), वरूण, मंगल, आनन्द ब्रह्मा, अर्यमा, बुध,अनादि, अनन्त, विष्णु, बृहस्पति, शुक्र, नित्य, रूद्र, उरूक्रम, शनैश्चर, शुद्ध, शिव, सूर्य, राहू, अक्षर, परमात्मा, केतु, बुद्ध, स्वराट्, परमेश्वर, यज्ञ, मुक्त, सविता, निराकार, होता, कालाग्नि, देव, बन्धु, निरंजन, दिव्य, सुपर्ण, कुबेर, गणेश (गणपति), गरूत्मान्, पृथिवी, पिता, जल, पितामह, विश्वेश्वर, मातरिश्वा, आकाश, प्रपितामह, भूमि, अन्न, माता, देवी, विराट्, अन्नाद, शक्ति, अत्ता, आचार्य, विश्व, वसु, गुरू, श्री, लक्ष्मी, भगवान्, कवि, सरस्वती, सर्वशक्तिमान्, पुरूष, न्यायकारी, विश्वम्भर, काल, दयालु, शेष, अद्वैत, आप्त, निर्गुण, शंकर, सगुण, महादेव, अन्तर्यामी, प्रिय, धर्म्मराज, स्वयम्भु, यम, कूटस्थ ।

इन नामों का विश्लेषण करते हुए कुछ आश्चर्यचकित करने वाले तथ्य पाठक के सामने उपस्थित होते हैं । सप्ताह के सभी सात दिन सोम से रविवार तक परमात्मा के नाम हैं । किसी के ऊपर न मंगल हावी होता है न शनि का प्रकोप जो पाखण्डियों ने जनता को भयभीत करने के लिए बना रखे हैं । पौराणिकों की त्रिमूर्ति-ब्रह्मा, विष्णु, महेश से भी परमात्मा का ही द्योतन होता है । यहाँ तक कि राहू और केतु भी इसी श्रेणी में आते हैं । पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश-ये पंच तत्व भी उसी परमेश्वर की लीला का बखान करते हैं । सत्, चित्, आनन्द तो उस परमेश्वर का स्वरूप हैं ही । अनादि, अनन्त उसे ही तो कहा जाता है । नित्य, शुद्ध, बुद्ध, और मुक्त उसी परमेश्वर के ही तो स्वभाव हैं । वह दयालु परन्तु न्यायकारी है । इसीलिए तो जीव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है । साकार और निराकार, निरंजन शब्द भी प्रकरणानुसार उसी दिव्यता की ओर संकेत करते हैं । नौ देवियों की जो चर्चा पुराणों में की गई है उन्हें भी ऋषिवर ने अलग-अलग परिभाषाओं के साथ परमेश्वर के नाम ही माना है । विश्व का भरण-पोषण करने के कारण वह 'विश्वम्भर' भी है । 'शिव' अर्थात् कल्याण-जो सब का कल्याण करने वाला है 'तन्मे मनः शिव संकल्प अस्तु' । अन्याय करने वालों को रूलाने के कारण वह 'रूद्र' भी है । सबके द्वारा वरणीय (चाहने वाला) और सबको चाहने वाला होने से वह 'वरूण' भी है । 'अग्नि' अग्रणी भवति'। ध्यान रहे चार वेदों में से पहले वेद ऋग्वेद का शुभारम्भ ही 'अग्नि' शब्द से होता है -'अग्निमीड़े पुरोहितं यज्ञस्य देवं ऋत्विजं । होतारं रत्नधातमम्' ।

इस लम्बी सूची में कुछ नाम (शब्द) तो पर्यायवाची हैं, इसमें सन्देह नहीं । परमेश्वर को,

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा

www.thearyasamaj.org

त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविडं त्वमेव, त्वमेव सर्वमम देव देव ।।

जब कहा जाता है तब माता, पिता, बन्धु, विद्या (सरस्वती) आदि सभी उसी के नाम माने गए हैं। शिव का पर्याय शंकर भी है। शम अर्थात् 'कल्याण' करोति इति शंकरः' जो सृष्टि के जीवों का कल्याण करता है वही ईश्वर शंकर भी है।

एक और सारगर्भित नाम है 'हिरण्यगर्भ' अर्थात् जो सूर्यादि तेजस्वरूप पदार्थों का गर्भ अर्थात् उत्पति और निवास स्थान है। यजुर्वेद का एक मन्त्र है–

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यातुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

इस मन्त्र से यह बात भी स्पष्ट होती है कि वह परमेश्वर एक ही है, नाम चाहे उसके अनेक क्यों न हों, और उसी ने पृथिवी और द्युलोक को धारण भी किया हुआ है।

इस ओंकार, सतगुर परसाद, कर्ता, पुरख, निरभो, निरवैर, अकाल जूनी इत्यादि अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बन्दे। एक नूर ते सब जग उपज्या, कौन भले कौन मन्दे। इन्द्रं, मित्रं वरूणमग्निमाहुरथो दिव्यस्स सुपर्णो गरूत्मान्। एकं सद्विप्रा वद्न्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।। (ऋग्वेद– 1.164.46) परमेश्वर के नामों की इस लम्बी सूची में 'ओ३म्' ही एक ऐसा नाम है जिससे परमेश्वर के अनेक नामों का ज्ञान उपलब्ध हो जाता है। परन्तु इन नामों को प्रकरणानुसार ही ग्रहण किया जाना चाहिए। यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 17 के अनुसार 'ओम खं ब्रह्म' ये तीनों शब्द भी उसी परमेश्वर के नाम हैं। 'अवति इति ओम्' रक्षा करने से, 'आकाशम् इव व्यापकत्वात् खम्' आकाश की भाँति व्यापक होने से और 'सर्वेभ्यो बृहत्वात् ब्रह्म' अर्थात् सबसे बड़ा होने से –ये सब परमेश्वर के ही नाम हैं। छान्दोग्य और माण्डूक्य उपनिषदों में भी इसी 'ओम्' की चर्चा है।

इस चर्चा में मैं कठोपनिषद् के यम–नचिकेता संवाद् के एक अंश को उद्धृत करने का मोह संवरण नहीं कर सकता। जिज्ञासु बालक नचिकेता ने यमाचार्य को कहा कि हे भगवान् जो आत्मतत्व, धर्म और अधर्म से पृथक है, जो कारण और कार्य रूप प्रपंच से पृथक है, जो भूत और भविष्य काल से भी पृथक है– ऐसी उस परमासत्ता से मुझे भी परिचय कराइए। तो आचार्य उसे आत्मतत्व पाने का साधन बताते हैं –

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति । यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्तेपदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ।। 1.2.15

अर्थात् सभी वेदादि शास्त्र जिस पद (शब्द–परम सत्ता) का वर्णन करते हैं, जिसको जानने के लिए मुमुक्षु (मोक्ष की इच्छा वाले) अनेक प्रकार की तपस्या करते हैं, जिसको पाने के लिए यति लोग ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, उस परमसत्ता को अत्यन्त संक्षेप में मैं तुझे बताता हूँ और वह है 'ओ३म्'। कैसे गागर में सागर भर दिया गया है।

इसी प्रसंग में यमाचार्य आगे कहते हैं,

एतद्धयेवाक्षरं ब्रह्म, एतद्धयेवाक्षरं परम् ।
एतद्धयेवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत् ।।
एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम् ।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्म लोके महीयते ।। 1.2.16, 17

इन दोनों मंत्रों में ''ओ३म्' अर्थात् ब्रह्म की अहिमा का वर्णन है। ओ३म् का स्मरण, ध्यान, जप ही ब्रह्म का वास्तविक स्मरण है और यह जप सभी जपों में उत्कृष्ट है। यह ओ३म् जीवन नौका को पार करने का परम साधन है। जो इसके महत्व को जान जाता है वह ब्रह्मलोक को पा लेता है। उसकी सब कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

अस्तु! ईश्वर के अन्य सब नाम गौण हैं और 'ओ३म्' नाम ही मुख्य है। मुमुक्षु को इसी का जप और ध्यान करना चाहिए।

श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय 8 श्लोक 12–13 में भी इसी 'ओ३म्' के महत्व का ही बखान किया गया है।

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीरतागाः । यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ।।

वेद के जानने वाले विद्वान सच्चिदानन्द रूप परम पद को अविनाशी कहते हैं, आसक्ति हीन यत्नशील संन्यासी महात्मा जिसमें प्रवेश करते हैं और जिस परम पद को चाहने वाले ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य का आचरण करते हैं, उस परमपद् को मैं (कृष्ण) तेरे (अर्जुन) के लिए संक्षेप में कहूँगा।

सर्वद्वारणि संयम्य मनो हृदिनिरूध्य च ।
मूर्ध्याधायात्मनः प्राणामास्थितो योगधारणाम् ।।
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्यावहरन्मामनुस्मरन् ।

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

www.thearyasamaj.org

ऋषि दयानन्द विष प्रकरण पर मेरे संस्मरण

ओममुनि

महर्षि दयानन्द जी को जोधपुर में षडयन्त्रपूर्वक विष दिया गया और चिकित्सा भी योग्य चिकित्सकों द्वारा नहीं कराई गई जिससे महर्षि का अजमेर में देहान्त हुआ । महर्षि जोधपुर राजघराने के अतिथि थे, उनके अतिथि को उन्हीं के राज्य में विष दे देना जोधपुर राजपरिवार के लिए कलंक की बात रही । इस कलंक को दूर करने के लिए राजपरिवार प्रारंभ से ही प्रयत्न करता रहा है, किन्तु सत्य इतिहास को राजपरिवार बदल न पाया ।

सन् 1984 के जून मास की बात है । आर्यवीर दल का एक शिविर आबू – पर्वत पर लगा था । उस समय आबूपर्वत पर आर्यसमाज का भवन नहीं था और न ही गुरूकुल की स्थापना हुई थी । उन दिनों वहाँ स्वामी धर्मानन्द जी (पूर्व नाम कपिल देव) आबू पर्वत पर ही एक कुटिया बनाकर रहते थे । उनके मन में विचार आया कि आबू पर्वत पर आर्यवीर दल का शिविर लगाया जाये और शिविर लगा । शिविर में राजस्थान के सैकड़ों आर्यवीरों ने भाग लिया था । शिविर एक मास रहा था ।

उन दिनों मैं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मंत्री होता था । उस शिविर के समापन अवसर पर मैं और अजमेर जिले से सांसद आचार्य भगवान देव आबू पर्वत गये थे । उस समापन समारोह में जोधपुर की राजमाता कृष्णा कुमारी जी भी पधारी थी । मंच पर बैठे हुए मैंने राजमाता जी से चर्चा में कहा कि जोधपुर राजघराने का सम्बन्ध आर्यसमाज से बहुत पुराना रहा है । स्वामी दयानन्द तो जोधपुर राजपरिवार के अतिथि के रूप में कई मास जोधपुर में रहे थे । वहीं उनको विष भी दिया गया था । आर्य कृपा करके आबू पर्वत पर आर्यसमाज मन्दिर बनवाने हेतु थोड़ी – सी भूमि दे दें या कोई बना–बनाया छोटा सा मकान दे दें तो बड़ी कृपा होगी । आचार्य भगवान देव जी ने भी इस बात के लिए राजमाता जी से आग्रह किया ।

राजमाता ने यह सब सुन मुझे व आचार्य भगवान देव जी को आबू पर्वत पर अपनी कोठी दिखाने अपनी गाड़ी से ले चलीं । मार्ग में राजमाता जी ने हमसे कहा कि यदि आप जोधपुर में स्वामी दयानन्द को जहर दिया जिससे स्वामी जी की मृत्यु हो गई । इस कलंक को यदि पुस्तकों में से हटवा दें तो मैं आपको मेरी इस कोठी में से आर्यसमाज निर्माण हेतु बड़ी जगह दे दूंगी । इस बात को सुनकर मैंने व आचार्य भगवान देव ने राजमाता जी से निवेदन किया कि इतिहास इस प्रकार से कोई बदल नहीं सकता । यह सत्य है कि स्वामी जी को जोधपुर में जहर दिया गया व उसी के कारण उनकी मृत्यु हुई ।

दूसरा – जोधपुर निवासी विजय सिंह भाटी की धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रकान्ता ने सुनाया कि स्मृति भवन का कार्यक्रम चल रहा था । उसमें जोधपुर की राजमाता भी थीं । कुवंर भूपेन्द्र जी मंच पर अपना कार्यक्रम दे रहे थे । उसमें उन्होंने जब यह कहा कि यह –वह स्थान है जहाँ ऋषि दयानन्द को विष दिया गया था, उसी से ऋषि की मृत्यु हुई जब राजमाता ने खड़े होकर भूपेन्द्र जी का कार्यक्रम रोक दिया और कहा इसमें हमारे राजघराने का कोई हाथ नहीं था । इतिहास जो है सो है ही, राजमाता के मना करने से क्या होता है ।

– ऋषि उद्यान, अजमेर
परोपकारी से साभार

यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ।।

अर्थात् सब इन्द्रियों के द्वारों को रोक कर तथा मन को हृदय में स्थिर करके फिर उस जीते हुए मन के द्वारा प्राण को मस्तक में स्थापित करके, परमात्मा सम्बन्धी योग धारण में स्थित होकर जो पुरूष 'ओ३म्' उस एक अक्षररूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थ स्वरूप मुझ निर्गुण ब्रह्म का चिन्तन करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है, वह पुरूष परमगति को प्राप्त होता है ।

अस्तु! इस 'ओ३म्' शब्द के दर्शन को समझते हुए आइए प्राणायाम के रूप में भी पूरी सांस भरते हुए इसका उच्चारण कर अपने को अहोभागी समझें । और कोई मन्त्र–चाहे प्रणव (गायत्री) मंत्र हो या कोई अन्य–याद रहे या न रहे, सृष्टिकर्ता का यह एक अद्वितीय नाम 'ओ३म्' तो अवश्य याद रहेगा । इसी पर उठते–बैठते अपना ध्यान केन्द्रित रखें ।

अन्त में इन पंक्तियों को गुनगुनाते हुए मैं इस लेख की इति करना चाहूँगाः

'ओ३म्' है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है ।
ओ३म् है कर्ता विधाता, ओ३म् पालनहार है ।

– ए–1055, सुशान्त लोक–1, गुरूग्राम–122009

www.thearyasamaj.org

आर्य जगत के समाचार

श्री विश्वनाथ जी का निधन -

आर्य समाज के शहीद महाशय राजपाल के सुपुत्र श्री विश्वनाथ जी का निधन 93 वर्ष की आयु में 26 जून को हो गया । अपने पिता के शहीद होने पर प्रकाशन के क्षेत्र में आपने प्रवेश किया था । राजपाल एण्ड सन्स का नाम प्रकाशनों में अपना गरिमामय स्थान रखता है । हिन्द पाकिट बुक्स तथा ओरियन्ट पेपर बैक्स भी आपके परिवार के प्रकाशन हैं । आपने भारत के प्रकाशन संगठनों को नेतृत्व प्रदान किया है ।

प्रकाशन के साथ वे आर्यसमाज की डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के वरिष्ट पदाधिकारी भी रहे तथा कमेटी के दिन प्रतिदिन की गतिविधियों का सूत्र संचालन करते रहे । डी.ए.वी. के प्रकाशनों का पूर्ण मार्गदर्शन आपका ही रहा है । डी.ए.वी. के उत्कृष्ट प्रकाशनों में आपका योगदान सर्वोपरि है । आपके निधन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है । आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ एवं आर्य सेवक परिवार के श्रद्धासुमन उन्हें अर्पित हैं ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन -

रजिस्ट्रार आफ सोसाइटीज उ.प्र. के द्वारा उक्त सभा का निर्वाचन सम्पन्न कराया गया । आचार्य श्री स्वदेश जी प्रधान निर्वाचित हुए । श्री भुवन तिवारी को मंत्री निर्वाचित किया गया ।

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन -

इस सभा का निर्वाचन श्री धर्मपाल आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । श्री सुरेश चन्द्र जी अग्रवाल को प्रधान तथा श्री हसंमुख भाई परमार को मंत्री पुनः निर्वाचित किया गया ।

डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री का अभिनंदन

नीमखेड़ जि. अमरावती में जन्मे सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री जो वर्तमान में दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव पद को सुशोभित कर रहे हैं का आर्य समाज मुम्बई की ओर से अभिनंदन किया गया । इस अवसर पर मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह, मंत्री श्री अरूण अवरोल, श्री लद्दा भाई पटेल जो कि प्रसिद्ध उद्योगपति तथा दानदाता हैं आदि महानुभाव उपस्थित रहे । अपनी सभाक्षेत्र के एक होनहार विद्वान के अभिनंदन से आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ हर्षित है ।

.....***.....

दयानन्द ने दी सरल हिन्दी

सरल हिन्दी के लिए देश में सबसे पहले अभियान चलाया था गुजराती मूल के स्वामी दयानन्द सरस्वती ने । 'आर्य समाज' की स्थापना (1875) से पहले उन्होंने 1863 में एकेश्वरवाद का प्रचार और मूर्तिपूजा का विरोध करने के लिए जनभाषा को अपनाया । उस समय की हिन्दी आज की हिन्दी से बिल्कुल मेल नहीं खाती । उसमें ब्रज और अवधी का बेहद प्रभाव था । भाषा संस्कृत से भी बोझिल थी । उसे देश के अलग - अलग हिस्सों में समझा नहीं जाता था । ऐसे में सुधारों को आगे बढ़ाने के लिए ऐसी भ्ज्ञाषा की जरूरत थी, जो लोगों तक उनके संदेश को सही-सही पहुंचा सके । इसके लिए उन्होंने अपनी भाषा गढ़ी, उनका अपना मुहाबरा था । यही मुहावरा और प्रवाह लोगों को बेहद भा गया और इस तरह नई सरल हिन्दी चलन में आई ।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के पृष्ठ 387 पर लिखा है कि स्वामी दयानन्द ने नवशिक्षित युवाओं के बीच संवत 1920 (वर्ष 1863) से घूम-घूमकर व्याख्यान देना शुरू कर दिया । ये व्याख्यान नई तरह की बहुत अच्छी और साधु भाषा में होते थे । स्वामीजी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' इसी भाषा में लिखा । उन्होंने वेदों का भाष्य भी इसी भाषा में प्रकाशित किया । स्वामीजी इस भाषा को आर्य भाषा कहते थे, लेकिन बाद में इसे हिन्दी कहा जाने लगा । उनका प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' भले उनकी मृत्यु के वर्ष 1883 में छपा हो, लेकिन आज की हिन्दी उसी से अपनी प्रेरणा पाती है । स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शब्दों और वर्णों के सही-सही उच्चारण के लिए भी अभियान चलाया । उन्होंने इसके लिए 20 पुस्तकों की एक श्रृंखला लिखी । इस श्रृंखला की पहली पुस्तक 'वर्णोच्चारण शिक्षा' है इसमें उन्होंने 63 वर्ण अलग-अलग लिखे । उनके उच्चारण का तरीका बताया । यह पुस्तक इतनी रोचक है कि बिना किसी ऑडियो-वीडियो के इसमें उच्चारण का सही तरीका बताया गया है ।

- दैनिक भास्कर से साभार

www.thearyasamaj.org

सभा क्षेत्र के समाचार एवं सूचनाएं

उत्तराखण्ड में आपदाग्रस्तों की सहायतार्थ संगीत संध्या -

आर्य युवा मंच दयानन्द भवन, बराट पथ जबलपुर द्वारा विगत माह उत्तराखण्ड में आई प्राकृतिक आपदा ग्रस्त लोगों के सहायतार्थ दिनांक 29 जून 2013 को संगीत संध्या शहीद स्मारक जबलपुर में आयोजित की गई जिसमें देश भक्ति गीतों एवं भजनों की प्रस्तुति दी गई । इस आयोजन में सहयोगी महानुभावों से लगभग दो लाख दस हजार रूपये एकत्रित किये गये । यह राशि उत्तराखण्ड में सेवारत् आर्यवीरदल के साथ परोपकारिणी सभा अजमेर को उत्तराखण्ड आपदा कोष में प्रदान की गई । कार्यक्रम के प्रारंभ में कार्यक्रम अध्यक्ष सांसद श्री राकेश सिंह जी, विशिष्ट अतिथि श्री विश्वमोहन दास, दानवीर उद्योपगति एवं समाज सेवी श्री कैलाश गुप्ता, आर्य समाज दयानन्द भवन के प्रधान श्री अमरनाथ शर्मा, श्री बी. एम. नेहरा (प्रधान आर्य समाज गोरखपुर), श्री देवेन्द्र माहेश्वरी (मंत्री आर्य समाज) श्री जे.एम.कुमार श्री राम विशाल पांडे, मंत्री आर्य समाज जी.सी.एफ. श्री धीरेन्द्र पाण्डेय पुरोहित, श्री पीयूष शर्मा, श्री पावन शर्मा, डॉ. प्रवीण मल्होत्रा, श्री सौरभ निगम, डॉ. सुभाष अलग, श्री श्रवण कोचर, श्री प्रतीक नेहरा, नीटू मुखी, श्री रोशन लाल संघी, श्री हृदय स्वरूप गुप्ता, श्री एस.के.गुप्ता, अशोक नेहरा, बी.आर.खेर, जयसिंह गायकबाड़ सम्पादक, आर्य सेवक आदि उपस्थित जन समूह ने श्रद्धांजलि दी । इस कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमति सुवर्चा शर्मा के द्वारा किया गया । गीतों की प्रस्तुति सरगम ग्रुप निर्देशक (श्री राजेश पिल्ले) के द्वारा की गई । आभार प्रदर्शन श्री जगदीश मित्र कुमार द्वारा किया गया । कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य युवा मंच एवं आर्यसमाजों के सभी सदस्यों का विशेष योगदान रहा ।

आयोजन के अवसर का चित्र हमने आवरण पृष्ठ 24 पर दिया है ।

आर्य समाजों के निर्वाचनों की जानकारी निम्नानुसार है –

आर्य समाज गंजीपुरा, जबलपुर-

प्रधान – श्री जयसिंह गायकवाड़, मंत्री – श्री राजाराम आर्य एवं कोषाध्यक्ष – श्री इन्द्रलाल यादव

आर्य समाज गोरखपुर, जबलपुर-

प्रधान – श्री ब्रजमोहन नेहरा, मंत्री – श्री प्रकाश चन्द सोनी एवं कोषाध्यक्ष – श्री विजयसिंह गायकवाड़

महिला आर्य समाज गोरखपुर जबलपुर-

प्रधान – श्रीमति कुसुम जिन्दल, मंत्राणी – श्रीमति निशा आर्या एवं कोषाध्यक्ष – श्रीमति डॉ. ईश्वर मुखी

आर्य समाज स्वामी दयानन्द सरस्वती वार्ड जबलपुर -

प्रधान – श्री अमरनाथ शर्मा, मंत्री – श्री देवेन्द्र माहेश्वरी एवं कोषाध्यक्ष – श्री श्रवण कोचर

महिला आर्य समाज एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती वार्ड जबलपुर -

प्रधान – डॉ सुश्री सावित्री सिंह, मंत्राणी – श्रीमति पूनम माहेश्वरी एवं कोषाध्यक्ष – श्रीमति एकता कोचर

आर्य समाज जी.सी.एफ. जबलपुर -

प्रधान – श्री राम सुरेश सिंह, मंत्री – श्री राम विशाल पाण्डेय, कोषाध्यक्ष – श्री भगवत प्रसाद

आर्य समाज हंसापुरी नागपुर में हवन कार्यक्रम -

आर्य समाज हंसापुरी ने सेंट्रल एवेन्यू स्थित ब्रह्मानंद भवन में हवन कार्यक्रम आयोजित किया । इसके यजमान श्री अशोक यादव थे । आचार्य उद्बोधन में ये कृष्ण कुमार शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मानव जीवन अति दुलर्भ है अतः भक्ति करें । यह भी आह्वान किया कि सर्वसाधारण को जनसेवा व हवन आदि के द्वारा अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए । प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रा.श्री अनिल शर्मा ने आर्य समाज में आकर समाज सेवा में अग्रणी होना चाहिए । जो व्यक्ति जीवन का आधा भाग व्यतीत कर चुकें हैं उन्हें शेष जीवन गरीबों, असहाय लोगों की भलाई में लगाना चाहिए । श्री रंगलाल प्रज्ञापति ने भजनों के द्वारा उपस्थितों को भाव विभोर किया । सर्व श्री सन्तोष गुप्त, तुफ़ेल अशर, तरूण शर्मा, राजेन्द्र पाण्डे, राजभान बाड़ी भस्मे श्रीमति रेखा जोगी आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही ।

आयोजन के फोटो हम आवरण पृष्ठ 24 पर दे रहे हैं ।

www.thearyasamaj.org

डॉ० सुरेन्द्र कुमार, कुलपति, का संक्षिप्त परिचय

जयसिहं गायकवाड़

आर्यसमाज की सर्वोच्च शिक्षण संस्था गुरूकुल कांगड़ी, जिसकी स्थापना स्वामी श्रद्धानन्दजी ने 111 वर्ष पूर्व की थी उस में डॉ0 सुरेन्द्र कुमार ने 10.7.2013 को कुलपति पद का पदभार ग्रहण कर लिया है ।

आपका जन्म 12 जनवरी 1951 को पिता श्री गहर सिंह जी व माता शान्ति देवी के यहाँ ग्राम मकडौली कलां, जिला रोहतक, हरियाणा में एक सात्विक परिवार में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल झज्जर में तथा उच्च शिक्षा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार तथा चण्डीगढ़ में हुई। आपने हिन्दी एवं संस्कृत में एम.ए. सर्वोच्च अंकों से उत्तीर्ण की।

आपने प्रायः 36 वर्षों तक प्रवक्ता तथा प्रधानाचार्य के रूप में स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय जि०महेन्द्रगढ़, कोसली, जि० रेवाड़ी तथा गुड़गांव, हरियाणा में राजकीय सेवाएं दी।

आपकी अनेक पुस्तकें विभिन्न विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं। आपके द्वारा लिखित व सम्पादित प्रमुख पुस्तकें हैं – विशुद्ध मनुस्मृति विशेष शोध एवं समीक्षा के साथ, वैदिक आख्यानों का वैदिक स्वरूप, महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति, महर्षि के यजुर्वेद भाष्य में संगति स्थापना, मनु का विरोध क्यो? आदि इस प्रकार लगभग 23 ग्रन्थ प्रकाशित हुए तथा कुछ पुस्तकों का अन्य भाषाओं में अनुवाद भी प्रकाशित हैं। आपके लगभग 200 शोधपत्र विभिन्न पत्रिकाओं, दैनिक समाचार पत्रों, आर्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

आपने विभिन्न विश्वविद्यालयों में–: दयानन्द चेयर पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ पंजाब, महर्षि दयानन्द वि०वि० रोहतक, प्राच्य विद्या विभाग, कुरुक्षेत्र वि०वि०,कुरुक्षेत्र आदि स्थानों पर शोध गोष्ठियों में दर्जन भर शोधपत्रों का वाचन किया है ।

दूरदर्शन पर आपके वक्तव्य प्रसारित हुए तथा हो रहे हैं। नेशनल डी.डी., आस्था, आस्था भजन, वैदिक भारती आदि में तथा इसी प्रकार आपके वक्तव्य आकाशवाणी पर भी प्रसारित हो रहे हैं।

विगत40 वर्षों से देशभर के आर्यसमाजों, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों में संयोजन तथा वक्तव्य प्रस्तुत करते रहे हैं।

आपको ग्रन्थ लेखन के लिए, आर्यसमाज की सेवा के लिए, तथा शिक्षक के रूप में अनेकों सम्मान प्राप्त हुए जिनमें वेद वेदांग पुरस्कार, श्रेष्ठ लेखक सम्मान, आर्य लेखक पुरस्कार, मेघजी भाई साहित्य लेखक पुरस्कार प्रमुख हैं।

डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी आर्य समाज के गौरव हैं। आप स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त हैं तथा ऋषि ऋण से उऋण होने के लिए लगातार लगे हुए हैं । सम्पूर्ण आर्य जगत् आपको विशुद्ध मनुस्मृति के लिए सदा स्मरण करता रहेगा। आपका यह ग्रन्थ यथार्थ में कालजयी ग्रन्थ है।

वर्ष 1990 में राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर परिसर में स्थापित महर्षि मनु की प्रतिमा हटाने का मनु विरोधियों व राजनीतिज्ञों के दबाव में 18 जजों की बैंच ने निर्णय लिया। आपने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर रिट डाली। एक वर्ष तक केस चला और लगातार पाँच दिन की बहस के बाद हटाने के विरूद्ध स्टे आदेश प्राप्त किया। परिणाम आज भी प्रतिमा वहीं उसी परिसर में शोभायमान है।

आर्य जनता आशा करती है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के स्वर्णिम सपनों को पूर्ण करने तथा गुरूकुल विश्वविद्यालय की पूर्व प्रतिष्ठा को दिलाने में सफलता प्राप्त करेगें ।

www.thearyasamaj.org

प्रति, _____

_____

जबलपुर में संगीत संध्या का भव्य आयोजन

आयोजन के मुख्य अतिथि, सांसद माननीय श्री राकेश सिंह जी दीप प्रज्जवलित करते हुए।

(विस्तृत समाचार पृष्ठ 19 पर दृष्टव्य है ।)

आर्य समाज हंसापुरी नागपुर में यज्ञ का आयोजन

आहुतियां प्रदान करते हुए श्रद्धालु आर्यजन (समाचार पृष्ठ 19 पर दृष्टव्य है ।)

प्रकाशक : प्रा. अनिल शर्मा, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा,
मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर, फोन: 0712–2595556 द्वारा उक्त सभा के लिए प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : आर्य प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर, फोन : 0761–4035487